

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -25

अगस्त - I - 2023



अंक - 09

माउण्ट आबू

Rs.-12

परमात्मा द्वारा विश्व परिवर्तन की अग्रदूत दादी प्रकाशमणि

समय प्रति समय इस धरा का तम हरने किसी न किसी महान विभूति का धरा पर आना होता है। वो न सिर्फ ईश्वरीय शक्तियों से भरपूर होता बल्कि उन शक्तियों को धरा पर उतारता है। ऐसी महान आत्माएं आने वाली पीढ़ियों के जीवन में हर समय एक सहारा और पथ प्रदर्शक का कार्य करते। अवतार का मतलब ही होता है, ऊपर के आदेशों को धरा पर उतारना। भले ही कैसी भी परिस्थितियां हों, पर वो अपने उसूलों के साथ समझौता नहीं करते। वो इस सृष्टि में चलते-फिरते एक फरिश्ते के रूप में ही होते उनसे जो भी जहाँ भी मिलता, वो उनके उत्कृष्ट जीवन के प्रकाश की खुशबू लेता और बिखेरे बिना नहीं रहता।

ऐसे ही एक अवतार के बारे में हम बात करने जा रहे हैं जिससे कभी न कभी आपका स्थूल या सूक्ष्म सानिध्य हुआ ही होगा। पर कोई ऐसी महान विभूतियों के बारे में कुछ कहना चाहे तो वह अपने शब्दों में उसे उतारने में असमर्थ होते हैं।

यू तो दादी का जीवन ही खुली किताब की तरह रहा, फिर भी जो भी उनके सानिध्य में आये, उन्होंने दादी को अपने अनुभवों से जाना, समझा। हम किसी को अपने व्यक्तित्व के आधार से या यूँ कहें कि हम अपनी क्षमता के आधार से देख पाते हैं। दादी का जीवन तो परमात्म निर्देशों को धरा पर उतारने के लिए ही था। परमात्मा द्वारा रचित इस महापरिवर्तन यज्ञ की दादी अग्रदूत थीं। उस महान आत्मा के जीवन से यही झलकता, जैसे कि उनका जीवन ही यज्ञ हो। वे यज्ञ की वेदी भी स्वयं, कुण्ड भी स्वयं, आहुति भी स्वयं थीं। उन्होंने यज्ञ की मर्यादाओं को परमात्म मर्यादाओं में बांध कर रखा। दादी भले ही आज हमारे साथ साकार में न हों, लेकिन एक पल भी नहीं लगता कि वो हमारे साथ नहीं हैं। आज हर कोई दादी के पदचिह्नों पर चलकर अपनी राह को आसान बना रहा है।

दादी प्रकाशमणि को अगर पारसमणि की उपाधि दें, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। अक्सर उनसे मिलने से ऐसा महसूस होता कि हमारे अंदर एक नई ऊर्जा का संचार हो रहा हो। हम अपने आपको मूल्यवान, कीमती सोना समझने लगते। वो समय तो अभी बीत चुका है, लेकिन आज भी उन क्षणों को सभी ने मूल्यवान समझकर संजो रखा है।

दादी ने महानता के आसमान को छू लेने के बावजूद अपने अंदर की इंसानियत को सदा कायम रखा। एक सामान्य व्यक्ति या मानव के रूप में दादी को जब हम देखते हैं, तो इंसानियत और मानवता का अर्थ समझ में आने लगता है। दादी छोटे-बड़े, साधारण से भी साधारण व्यक्ति का खास ध्यान रखते। खास करके वृद्ध आयु के भाई-बहनों को पास बुलाकर



विशेष एक-एक को उनके आरामदायक आवास-निवास के लिए पूछते, उनके स्वास्थ्य के बारे में पूछकर उन्हें उचित सुविधा देते थे।

दादी ने कभी भी किसी के द्वारा कही-सुनी बातों पर विश्वास कर किसी भी आत्मा के प्रति अपना मत नहीं बनाया, और उस व्यक्ति को उस नजर से नहीं देखा। इतने बड़े विशाल यज्ञ में हर तरह के, हर विशेषताओं के, हर कैटेगरी के लोग रहते थे, उन सभी के लिए दादी खास थीं। और तो और, जब कर्मचारी वगैरह कार्य करते थे, वे भी दादी से बहुत प्यार करते थे, और दादी भी उन्हें प्यार लुटाती थीं। दादी हरेक के साथ जैसे एक मददगार के रूप में खड़ी हों, ऐसी सबको भासना आती

थी। दादी के इस इंसानी जज़्बे रूपी विशाल वृक्ष की छाया से कोई भी वंचित नहीं रहा।

दादी एक कुशल प्रशासिका तो थीं ही, पर उन्होंने एक आदर्श टीचर, सभी की प्रेरणास्रोत, एक ममतामयी माँ, पालनहार पिता के रूप में अपनी दूरदृष्टि से ईश्वरीय यज्ञ को आसमान की ऊँचाइयों तक पहुँचाया। परन्तु एक आदर्श विद्यार्थी का उनका रूप भी हम अनदेखा नहीं कर सकते। उन्होंने एक सफल प्रशासिका के साथ-साथ आदर्श विद्यार्थी की भूमिका भी बखूबी निभाई। दादी सभी से कुछ न कुछ गुण उठाती रहतीं अर्थात् सीखना उनके ज़हन में था। आठ दशक के जीवन में दादी एक प्रखर व्यक्तित्व के रूप में जीवन्त रहीं।

तो ऐसे महान आत्मा के पुण्य स्मृति दिवस पर यह घड़ी हमारे लिए सिर्फ दादी को याद करने तक ही सीमित नहीं, अपितु अपना आत्मविश्लेषण करने की भी है। स्वयं को शांति की गहराई में ले जाकर, अपनी विशेषताओं को दादी की विशेषताओं के साथ जोड़कर देखना होगा कि कहाँ कमी है, जिसे हमें बदलना है। अगर हम ऐसा बन जाते हैं तो यही दादी को सच्ची खुशी दिलाने वाली हमारी श्रेष्ठ श्रद्धांजलि होगी।

दादी पवित्र और निर्मल प्रेम की मूर्ति थीं। दादी के व्यक्तित्व में जो चुम्बकीय आकर्षण था, उसकी शुरुआत ही उनकी पवित्र और स्वच्छ मुस्कुराहट से होती थी। दादी की उपस्थिति मात्र

ही आस-पास की हवाओं में अपनी रुहानी खुशबू फैला देती थी।

दादी ने सबके गुणों को परखा और उसी अनुरूप उन्हें सेवाएं भी दीं और यज्ञ को विशेषताओं से भरा एक खूबसूरत गुलदस्ता बनाकर आगे बढ़ाया। आज भी उनके द्वारा सींचे गए इस विशाल वृक्ष का मीठा फल सर्व आत्माओं को मिल रहा है। ऐसी हमारी प्यारी दादी प्रकाशमणि, प्रकाश स्तम्भ बनकर आज भी हम सबके साथ और सम्मुख हैं। आज हम उनसे मिली शिक्षाओं को धारण कर उनके जैसा बनने की प्रतिज्ञा लेते हैं, यही हमारा उनके प्रति सच्चा स्नेह और श्रद्धासुमन है।

दादी महीन पुरुषार्थ से बनीं महान

एक फुटबॉल टीम के बच्चे गुफा में फंस गये। वे प्रकृति के सामने इतने बेबस थे कि बाहर आना तो दूर बल्कि प्रकाश की एक किरण भी देखने के लाले पड़ गये थे। आप कल्पना करें कि प्रकाश न हो तो जीवन, जीवन ही नहीं रह जाता। इन बच्चों ने गुफा के अंदर छोटी चट्टान के बीच करीब पंद्रह से बीस दिन गुज़ारे। बारिश का मौसम होने के कारण गुफा में पानी भर गया और वे बाहर आ नहीं सके। उनके साथ उनका कोच भी था। कोच कहीं न कहीं ध्यान-योग की विधि से मन को परिस्थिति के मुताबिक ढ़ालने की कला में माहिर था। उसने बच्चों का न सिर्फ़ हौसला बनाये रखा बल्कि खुद ने भी हिम्मत नहीं हारी। उस योग के प्रकाश की भीतरी किरण ने ही उन्हें ज़िंदा रखा और समय रहते वैज्ञानिक तकनीकों के समन्वय से उन्हें सुरक्षित बाहर निकाला जा सका।

ऐसे ही हमारे जीवन में भी कभी उतार-चढ़ाव आते हैं, ऐसे में आध्यात्मिक उज्ज्वल ज्योति की उम्मीद की किरण ही हमें मार्ग दिखा सकती है। ऐसे ही ज़िंदगी के उतार-चढ़ाव व उलझनों के मध्य हमारी दादी प्रकाशमणि ने बहुतों



ब.कू. गंगाधर

के आसमान को छूने के बावजूद भी उनकी सरलता और निरहंकारिता जैसे गुणों ने हमारे हृदय में अपनी अमिट छाप छोड़ी जो आज भी भुलाये नहीं भूल सकती। ऐसे ही एक लम्हे की बात करें तो एक बार बारिश का मौसम था। सुबह के समय बारिश जोर से अपना रूप दिखा रही थी। ठंड भी लग रही थी। दादी जी क्लास के लिए आईं और भंडारे वालों को कहा कि सभी को गरम-गरम हलवा खिलाओ। तुरंत ही क्लास के बाद सभी को गरम-गरम हलवा (टोली के रूप में) दिया गया। दादी प्रासंगिकता के अनुरूप कार्य करके सभी को उमंग-उत्साह दिलाते। सभी के दिल के भाव को समझ लेते। ये उनकी विशेषताओं में शुमार था।

एक बार ठंड के मौसम में ज्ञानसरोवर के निर्माण कार्य में दादी जी निर्माण स्थल पर पहुंचे। देखा कि सारे बड़े प्यार से सेवा कर रहे हैं और ठंड भी जैसे उनकी परीक्षा ले रही है। पर ये खुदाई खिदमतगार परमात्म कार्य में ठंड की फ़िक्र किये बिना जुटे हुए हैं। उनको तुरंत ख्याल आया कि सबको गरम-गरम पकौड़े खिलाये जायें। सेवाधारियों द्वारा इसकी व्यवस्था आज्ञानुसार कर सबको गरम-गरम पकौड़े खिलाये गये। दादी जी का ये भाव सबके दिल को छू लेने वाला होता था।

दादी जी हर कार्य को समयबद्ध रूप से करने की हिमायती थीं। जैसे ज्ञानसरोवर का निर्माण कार्य चल रहा था, लेकिन उसकी ओपनिंग डेट पहले से ही फिक्स कर दी गई थी। हमें अच्छी तरह से याद है कि ओपनिंग डेट पर सुबह दस बजे ओपनिंग होनी थी और हार्मनी हॉल के स्टेयरकेस का कार्य कड़के की ठंड के मध्य रात भर चलकर सुबह छः बजे समाप्त हुआ। और निश्चित समय पर ही उद्घाटन भी हुआ। दादी जी निश्चय और निश्चिंतता की धनी थीं। कैसे होगा, कौन करेगा, ऐसी बातें तो उन्हें कभी छू भी नहीं पाईं। उस समय यज्ञ में ज्ञानसरोवर का विशाल प्रोजेक्ट का निर्माण करना था पर कैसे होगा उसके लिए आर्थिक व्यवस्था कैसे कर पायेंगे इसके लिए भी दादी बिल्कुल निश्चित थीं। दादी जी हमेशा कहती थीं कि मैं तो निमित्त हूँ, शिव बाबा का कार्य है और वो ही सबकुछ करवा रहा है। उसमें ज़रा-सी भी निश्चय की सुई को हलचल की मार्जिन नहीं रहती थी। मैंने दादी जी को प्रेमपूर्वक प्रशासन करते हुए नज़दीक से देखा। कैसे कार्य करना है और किससे करवाना है, दादी जी इन सब चीज़ों का समन्वय बनाकर प्रेम से कार्य को सम्पन्न करती थीं। दादी जी यज्ञ की कोई भी चीज़ वेस्ट न हो उसका पूरा ध्यान रखती थीं। हमें याद है कि जब कंस्ट्रक्शन का कार्य चल रहा था तो पाइप से पानी यूँ ही व्यर्थ बह रहा था। तो दादी ने सम्बंधित भाई को बुलाकर उसे तुरंत ठीक करवाया। क्योंकि माउण्ट में पानी की हमेशा कमी रहती थी। दादी जी जिसे कार्य देती थीं उसपर पूरा विश्वास रखती थीं तथा मार्गदर्शन भी करती थीं ताकि परमात्मा के यज्ञ में कुछ भी अनुचित न हो।

दादी जी की सबसे बड़ी खूबी तो ये थी कि कोई भी सरलता से उनसे मिल सकता था और सहृदयता से अपनी बात कह सकता था। और फिर यज्ञ रक्षक बन बड़े उमंग और ईमानदारी से यज्ञ के कार्य में जुट जाता था। दादी ने ज्ञानसरोवर के विशाल प्रोजेक्ट की जिम्मेवारी देने हेतु हमपर विश्वास रखा, हमें इस योग्य समझा ये हमारा सौभाग्य है। उनकी पालना के लम्हें जैसे साकार में नज़रों के सामने ही है। ऐसी हमारी दादी को उनके पुण्य स्मृति दिवस पर गहरी भावनाओं के साथ श्रद्धासुमन अर्पित।

मन्सा वृत्ति को पवित्र बनाने के लिए दैहिक वृत्ति को समाप्त करो

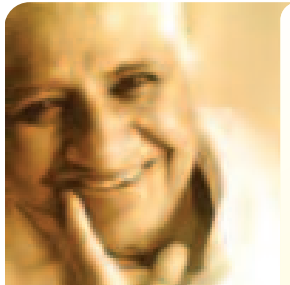
मन्सा की पवित्रता कहाँ तक धारण की है? प्रकृति में चंचलता क्यों होती है? खान-पान में वृत्ति क्यों जाती है? फैशन व कपड़ों आदि में शौक क्यों? देह-अहंकार का नशा क्यों? मन में गुस्सा उठता है क्यों? जब बाबा इशारा देते बच्चे अन्तर्मुख हो जाओ फिर भी अन्तर्मुख क्यों नहीं होते? बाबा कहते बच्चे गम्भीर हो जाओ तो भी इशारे को क्यों नहीं समझते? योग में इन्ट्रेस्ट क्यों नहीं? क्यों नहीं शीतल योगी बनते? पढ़ाई में इन्ट्रेस्ट क्यों नहीं?

इन सब प्रश्नों का जवाब यही है कि अन्दर की मन्सा वृत्ति प्युअर नहीं है। अन्दर में प्युरिटी हो तो उसकी शक्ति से यह सब बातें समाप्त हो जायेंगी। इसका अपने ऊपर अटेन्शन हो। बाहरमुखता के कारण ही वृत्ति जाती है। बाहरमुखता आने से ही संग का रंग लगता है और विकारों के वशीभूत होते हैं।

हम सब रक्षक बाप की रक्षा के नीचे बैठे हैं, इसलिए ख्याल चला कि हर एक अपने अन्दर ऐसी विल पॉवर क्यों नहीं रखते हैं? क्या आप पाण्डव ऐसी चैलेन्ज कर सकते हो कि हम पक्के पवित्र योगी, सर्वकर्मोन्द्रिय जीत हैं? कोई भी देह आकर्षण मुझे आकर्षित कर नहीं

सकती?

दिखाते हैं कि जगदम्बा काली ने अपने पांव नीचे असुर को दबाया है। यदि थोड़ी भी बुरी दृष्टि वाला है तो



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

उसको असुर कहा जाता है। उसे एकदम पांव नीचे दबाया, उसका नाम है शिवशक्ति। कोई भी वृत्ति वाला क्यों नहीं आवे, उसकी वृत्तियां सामने आते ही बदल जायें। दुनिया इस बात को मुश्किल समझती और बाबा हमें इसी बात पर विजय प्राप्त करते हैं।

जो बालब्रह्मचारी योगी हैं, वह बड़े नाज से कहेंगे, ऐसे बाल ब्रह्मचारियों ने यह रिकार्ड तोड़ा है। तो अपने आपसे पूछो कि क्या हमने कम्पलीट मात्रा में इन विकारी वृत्तियों को जीता है? अगर

नहीं तो क्यों? हंसी-मज़ाक भी क्यों?

हमारे पाण्डव पक्के योगी रहो - यह है मेरा संकल्प। एक-एक पाण्डव चमकता हुआ योगी दिखाई दे। तो खुद

ब्राह्मण माना शीतल काया वाले योगी। जब काम की वृत्ति पूरी नहीं होती तो गुस्सा निकलता है। दैहिक वृत्ति जाना माना पाप, तो पुण्य आत्मा कब बनेंगे? जो कम्पलीट विजयी हैं उसे ही पुण्य आत्मा कहा जायेगा।

की सूक्ष्म चेकिंग करो कि हमारी मन्सा, वाचा सूक्ष्म भी कहाँ है? अगर मन्सा वृत्ति भी किसी देहधारी में जाती है तो दृढ़ता की तपस्या अग्नि में उस वृत्ति को समाप्त कर दो।

हम शूद्र जन्म से मर गये तो फिर हमारे में वह संस्कार क्यों? अभी हमारा जन्म बदल गया, संस्कार बदल गये- तब ब्राह्मण बने। नहीं तो ब्राह्मण ही नहीं कहो। ब्राह्मण माना शीतल काया वाले योगी। जब काम की वृत्ति पूरी नहीं होती तो गुस्सा निकलता है। दैहिक वृत्ति जाना

माना पाप, तो पुण्य आत्मा कब बनेंगे? जो कम्पलीट विजयी हैं उसे ही पुण्य आत्मा कहा जायेगा। तो क्या यह सम्भव नहीं हो सकता? क्या पाण्डव ऐसे पॉवरफुल बनकर नहीं हो सकते? आज ये इस संस्कार का अन्तिम संस्कार कर दो। सम्भव है या नहीं? हम सब विजयी रत्न हो जाएं। साइलेंस का ऐसा वायुमण्डल बनाओ। पवित्रता के बल से विश्व को पावन बनाने की सेवा करो।

अपनी सूक्ष्म चेकिंग करो कि -

1. अब घड़ी तक मेरी मन्सा, वाचा कितने परसेन्ट प्युअर बनी है?
2. अगर कोई हार है तो मेरी प्रकृति के अनुकूल किस प्रकार की वीकनेस है? दृष्टि, वृत्ति, संकल्प, स्वप्न...
3. अगर सूक्ष्म में भी विकारी भावनायें हैं तो क्या यह महसूस होता है कि यह पाप है और इसे भस्म करना ज़रूरी है?
4. मैं आज से इसे 100 प्रतिशत भस्म करता हूँ- क्या यह वायदा अपने आपसे कर सकते? या सोचते हैं कोशिश करेंगे? तो अब इस प्रतिज्ञा की पक्की राखी बांधो और मन्सा से भी अपवित्रता के नामनिशान को समाप्त करने का दृढ़ संकल्प लो।

ये दो बोल अपनी डिक्शनरी से तो क्या पर सोच से, वृत्ति से भी निकाल दो

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

हमको बीच-बीच में बार-बार अशरीरी बनने का अभ्यास ज़रूर करना है। यह बहुतकाल का अभ्यास चाहिए। समय के अनुसार सभी साधारणता बिल्कुल खत्म हो जानी चाहिए। जो यहाँ बहुतकाल स्वराज्य अधिकारी बनते हैं वही वहाँ बहुतकाल के राज्य अधिकारी बनते हैं। सर्विस तो हो भी रही है और होती भी रहेगी लेकिन यह विदेहीपन की स्टेज का अनुभव अभी बढ़ाना चाहिए। जब हम इस अभ्यास में सम्पूर्ण और सम्पन्नता की ओर आगे बढ़ेंगे तब हम बड़े हैं, निमित्त हैं। तो हर एक विन करके वन नम्बर अर्जुन बने, यही उम्मीद बापदादा ने रखी है। तो इस उम्मीद को पूरा करेंगे ना? करनी ही है। हम बापदादा के दिल की आशाओं के दीपक नहीं करेंगे तो और कौन करेंगे? करेंगे नहीं, गे, गे... खत्मा। संकल्प मात्र भी ऐसे संकल्प नहीं लाना है। बाबा की सब उम्मीदें हमें पूरी करनी हैं।

स्व को देखें, स्व का दर्शन करें, स्वमान में रहें। निमित्त होने कारण सभी हमको कई बातें सुनायेंगे ज़रूर, फिर भी उस व्यर्थ वायब्रेशन में न आ करके, किसी के कमजोर संस्कार का प्रभाव हमारे ऊपर न पड़े। शुभ भावना सम्पन्न रहें।

बाबा हमेशा याद दिलाते हैं कि बच्चे यहाँ धर्म और राज्य दोनों स्थापन हो रहे हैं इसलिए हमको सदैव सर्व के प्रति शुभ भावना रखनी है। भले कोई कैसा भी है, है तो बाबा का बच्चा, आया तो यज्ञ वत्स होके है इसलिए हर एक के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रखकर, उनको सहयोग दे करके आगे बढ़ाना है। शिवबाबा समान फूलों से भी प्यार तो कांटों से भी प्यार रखना है। किसी के साथ ज़्यादा लगाव भी न हो लेकिन एक सद्भावना से उसका कल्याण करने की भावना ज़रूर हो, तो उसका फल ज़रूर मिलता है।

हम निमित्त हैं तो निमित्त वालों को थोड़ा

विशेष अटेन्शन देना ही पड़ेगा। नहीं तो और भी हमें देख हमारे जैसा ही करते रहेंगे क्योंकि हम निमित्त हैं इसलिए व्यर्थ, निर्गेटिव, साधारण संकल्पों से स्वयं को बचाना ज़रूर पड़े क्योंकि संगठन हमारा बढ़ता ही जायेगा और सब जगह पर बातें भी ऐसी नई-नई सुनने में आती हैं, जो समझ में ही नहीं आता है, कौन बोलने वाला है और कहाँ से बातें आ रही हैं? यह हैं हमारे पेपर। जैसे साइडसीन में सब तरह की चीज़ें आती जाती रहती हैं। तो ये जो भी पेपर व तूफान आते हैं उसको एक तोहफा समझकर पास करें, क्योंकि यह सब अनुभवों बनाके आगे बढ़ाते रहते हैं। और ऐसे समय पर बुद्धि रूपी विमान से परमधाम में सर्वशक्तिवान बाबा के साथ बैठ जाओ तो उसके आगे कोई बड़ी बात नहीं है। तो हमारा ऐसा अभ्यास होना चाहिए, जो भी अपने को निमित्त समझते हैं वह अपनी जिम्मेवारी पूरी निभायें।

दो बोल अपनी डिक्शनरी से तो क्या पर सोच से, वृत्ति से भी निकाल दो कि - क्या होगा? कैसे होगा? क्योंकि इससे उदासी आती है। भगवान के बच्चे और ऐसे सोच में चले जाने से तो न कभी स्वमान में रहेंगे, और बाबा से जो मिला है वह हमारी जीवन में दिखाई भी नहीं देगा। दूसरे को भी प्राप्ति नहीं होगी। अकेले हैं या सबके बीच में हैं लेकिन हमें तो सारा जहान देख रहा है। एक तरफ बाबा देख रहा है, दूसरा परिवार देख रहा है तो सोचो हमें स्वयं को कैसे देखना चाहिए? कई ऐसी अच्छी-अच्छी, ऊंची-ऊंची बातें जो हैं वो स्मृति में रखने से अपने ऊपर अटेन्शन रहता है और वही सिमरण करने से स्व सहित सर्व को प्राप्ति होती रहेगी। हम आत्मा भी निमित्त हैं परमात्मा से मिलाने के लिए, ऐसी सोच हो तो और किसी प्रकार का रिचक मात्र भी हमारे अन्दर संकल्प आ नहीं सकता है।

हमारा ऐसा मुस्कुराता चेहरा हो... जो भी देखे तो वो भी मुस्कुराने लगे...

राजयोगिनी दादी जानकी जी

बाबा की दृष्टि महासुखकारी है। शुरू के दिनों में हम बाबा की दृष्टि से जैसे पागल हो गये थे। ऐसे में बाबा हमारी टेस्ट लेने के लिए 2-3 महीना कहीं चला गया। वहाँ बैठे भी वायुमण्डल में बाबा के ऐसे वायब्रेशन आते थे जो हर एक को सहयोगी बना देते थे। बाबा ने अपने अनेक बच्चों को सहयोगी बना करके सहज योगी बना दिया है। हम हंसी में कहती थी कि हम मुफ्तलाल कम्पनी में रहते हैं। वो तो कपड़े की मील का नाम था। लेकिन हम बिगर कौड़ी बादशाह हैं, बेफ़िक्र हैं। थोड़ा-सा सम्पूर्ण बनने का, बाप समान बनने का फ़िक्र है। बनना है ज़रूर, पर मैं

बनूँ, उसका सबूत है - आसमान में देखो सारे स्टार्स दिखाई देते हैं। लेकिन चन्द्रमा की चमक अपनी होती है। तो हमारा भी ऐसा फूल मून डे की तरह सम्पूर्ण रूप हो। एक भी लकीर कम है, आगे की या पीछे की तो वो आकर्षण नहीं है। तो सम्पूर्ण चन्द्रमा समान बनने के लिए ज़रा भी कमी न हो। यह भगवान छोड़ेगा, भले अभी अलबेलाई में सुस्ती में कोई न कोई कारण से पुरुषार्थ ढीला है, लेकिन ऐसा समय आयेगा जो बाबा खड़ा कर देगा।

तो हमेशा मैं स्वयं को समझाती हूँ कि यह वक्त जा रहा है... फिर से नहीं आयेगा। अभी जो आपस में एक-दो का सहयोग है, आपस में स्नेह, प्रीत है। यह फिर नहीं होगा इसलिए हर आत्मा भाई-भाई

है, यह अभ्यास अन्दर से पक्का हो। भले मैं अकेली बैठी हूँ या 10 के साथ बैठी हूँ, पर दृष्टि में हम आत्मायें भाई-भाई हैं। तो मैं सोचती हूँ यह पुरुषार्थ देवतायें थोड़े ही करेंगे, सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग, कोई भी युग में पुरुषार्थ नहीं है। उतरती कला है, बाँडीकॉन्सेस शुरू हो जाता है। सतयुग में तो यहाँ के पुरुषार्थ के अनुसार बहुत गुणवान होंगे, कोई कमी नहीं होगी। पर पुरुषार्थ करने का अभी जो समय है, इसमें बहुत फायदा है। समय साथ दे रहा है। मैं सच्ची बात सुनाती हूँ, जो भी बात है संकल्प में या कोई भी बात में समय व्यर्थ नहीं गंवाती हूँ, मन खाता है।

हम आपस में ऐसे मिल करके बैठते हैं, योग करते हैं, रूहरिहान करते हैं या अकेले हैं, खाना खा रहे हैं, पर खाते भी बाबा अच्छा याद आ सकता है। याद अन्दर की बात है, खाना मुख द्वारा खा रहे हैं, याद अन्दर कर रहे हैं, यह अभ्यास संगम पर जो करते हैं वो बहुत सुख पाते हैं।

मैं साक्षी हो करके देखती हूँ यहाँ लेबर भी जो झाड़ू लगाते हैं वह भी बहुत अच्छा मुस्कुराते हैं। लेकिन बाबा के बच्चे कोई तो ऐसे हैं जिनके लिए मुस्कुराना बहुत मुश्किल है। सीरियस हो जाते हैं, सीरियस रहने की नेचर खुशी खत्म कर देती है। उसको देख करके कोई खुश नहीं होगा। कई बार मैं अन्दर से अपने आपको पदमापदम भाग्यशाली समझती हूँ जो देखे वह मुस्कुराये।



दादी जी के साथ के कुछ अविस्मरणीय यादें, जो बने जीवनपर्यन्त प्रेरणादायी

शारीरिक अस्वस्थता को ईश्वरीय सेवाओं में बाधा नहीं बनने दिया



ड्रामानुसार दादी के साथ मुझे 40 वर्ष रहने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं छोटी आयु में ही यज्ञ में आ गई थी इसलिए दादी मुझे लवली बेबी कहती थीं। दादी ने मुझे हर कार्य सिखाया, छोटे से छोटे और बड़े से बड़ा। दादी के सानिध्य में आकर मैंने सिखा सब बड़ों के साथ, छोटे के साथ सबके साथ हमारा व्यवहार

क्या होना चाहिए। दादी की तीन बातें बहुत ही प्रेरणादायक रहीं। निमित्त भाव, निर्मानचित्त और निर्मल वाणी। दादी इतनी बड़ी दादी थे तब भी उनमें कोई अहम नहीं था। निर्मानचित्त। चाहे कोई छोटा हो या बड़ा हरेक को रिगार्ड देना, हरेक का दिल लेना, हरेक के गुणों को देखना, हरेक को आगे बढ़ाना। कभी जोर से नहीं बोलना, कभी गुस्से से नहीं बोलना लेकिन बहुत प्यार से कोई भी बात कहनी है। हम कितनी भी गलती करके आये, लेकिन दादी जी सदा ही हमें प्यार से कहती थीं कि मुन्नी ये काम ऐसे नहीं ऐसे होता है। और निर्मल वाणी, अपनी वाणी को हमें बहुत मधुर और मीठा रखना है। हमेशा दादी का कहना था, कम बोलो, मीठा बोलो, धीरे बोलो और सोचकर बोलो। दादी से हमने सीखा सबको प्रेम देना है। कभी भी किसी के प्रति निगेटिव संकल्प नहीं आना चाहिए, व्यर्थ संकल्प नहीं आना चाहिए। सभी के प्रति पॉजिटिव संकल्प, पॉजिटिव विचार, समर्थ संकल्प और सदा सबको शुभ भावना और शुभ कामना का दान देना है।

बाबा के अव्यक्त होने के बाद ओम शांति भवन में दादी मुरली सुनाते थे। तो कभी-कभी दादी की तबियत अच्छी नहीं होती थी, तो हम दादी को कहते थे कि आज आपको मुरली सुनाने नहीं जाना है। डॉक्टर ने कहा है, आज आपको रेस्ट करना है। लेकिन हमारी प्यारी दादी जब तक बच्चों से न मिले, तब तक उनको चैन नहीं आता था। वो तुरंत मेरे को कह देती थी तुम खुद भी सुस्त बनती हो और दादी को भी सुस्त बनाती हो। दादी तो जरूर जायेगी मुरली सुनाने के लिए। दादी रूकती नहीं थीं, कैसी भी तबियत में, कैसी भी परिस्थिति में। दादी क्लास में पहुंच जाती थीं। बाबा की मुरली सुनाती थीं और बाबा के सभी बच्चों से मिलकर याद-प्यार देती थीं। उसमें ही उनको चैन की अनुभूति होती। - राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज

दादी की परख शक्ति गजब की थी



अपनी पढ़ाई सम्पन्न करने के बाद 1969 में मधुबन में कॉलेज करने वाली बहनों की पहली टीचर ट्रेनिंग में अपनी लौकिक माँ के कहने पर मैं आ गई। मेरा लक्ष्य था कि मैं फिर्नैशिली इंडिपेंडेंट रहूंगी, क्योंकि धन के लिए डिपेंडेंस ठीक नहीं। मैं जॉब करूंगी।

लेकिन ट्रेनिंग में अच्छी पॉवरफुल क्लास मिली और फिर दादी ने कहा कि तुम कितना कमा लोगी! लेकिन मम्मा जैसे अगर आप कई आत्माओं के जीवन को प्रेरित करें, वे बाबा के यज्ञ में सहयोगी बनें तो उसका शेयर आपको मिलेगा। तो बात समझ में आई। फिर ट्रेनिंग पूरी करने के बाद हम वापस घर गये। मेरे पिता जी बहुत स्ट्रिक्ट थे। वे चाहते थे कि मैं आगे स्टडी करूँ क्योंकि बाबा का भी डायरेक्शन था। फिर बड़ी दादी ने पिता जी को पत्र लिखे कि आपने आशा को बांधेली बना लिया है, मैंने पंछी भेजे थे कि ये वापस लौटकर आयेगे लेकिन आपने पंछियों को पिंजरे में डाल दिया है। ऐसे दादी उनको लिखते रहते थे और आखिर दादी ने घर से मुझे बुला ही लिया। मैंने पोस्ट ग्रेजुएशन कम्प्लीट किया, पिता जी को संतुष्ट करने के लिए एक साल जॉब भी किया, सब दादी से पूछ के। और फिर दादी ने मुझे मधुबन में बुला लिया। मैं ये कहूंगी कि दादी निमित्त बने इतने सुंदर जीवन को देने के लिए। बाबा ने मरजीवा जन्म दिया किंतु जो आगे का जीवन बनना हुआ वो आदरणीय दादी जी के ही डायरेक्शन में, निरीक्षण में होता रहा है और आज दिन तक भी है। मैं दादी को कभी एब्सेंट नहीं समझती हूँ। दादी अव्यक्त रूप से सदा साथ हैं। अगर दादी की बातें मेरे साथ हैं तो दादी मेरे साथ हैं। - राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, निदेशिका, ओआरटी

मास्टर बनकर नहीं, फ्रेंड बनकर चलाया



जिस समय विदेश की सेवाएं शुरू हुई हैं उस समय दादी का शुरू से ही हर प्रकार से न सिर्फ सहयोग रहा, योगदान रहा परन्तु दादी लीडर के रूप में एक विशाल बुद्धि होने के कारण, दुरादेशी बुद्धि होने के कारण दादी समझ सकती थीं कि विदेश की सेवा के लिए किस प्रकार से पालना देनी होती। तो जब हम दादी के पास आते थे, राय सलाह कोई लेनी होती तो दादी का बिल्कुल एक सेकण्ड बाबा की याद में रूकना और फिर दादी हमें ऐसे राय-सलाह देती थी जो बिल्कुल एक्ज्यूट। दादी की हर प्रकार से जो राय होती थी वो बहुत ही योगयुक्त, युक्तियुक्त, राजयुक्त कहें वो हमको ऐसे एक्ज्यूट बताती थीं, जो हमें एक्ज्यूट गाइडेंस मिल जाती थी। तो उस आधार पर न सिर्फ एक देश न सिर्फ सारे विश्व में बाबा का कार्य चल रहा है। तो हम कहेंगे कि दादी जी के लीडरशिप के हिसाब से दादी ने इतनी प्रेरणादायी बातें बताईं। जिससे आज विश्व की सेवायें भी चल रही हैं।

जब दादी टीचर्स से मिलती थीं, बात करती थीं तो कहतीं कि आप मेरे फ्रेंड्स हो। दादी ये नहीं कहती थीं कि मैं आपकी मास्टर हूँ। तो उस फ्रेंडशिप के नाते से बहुत ही समीप सम्बन्ध बनाकर दादी हमें पालना देती रहीं फिर साथ-साथ शिक्षा भी देती रहीं। फिर जब प्यार होता तो कोई भी बात स्वीकार करने को मन तैयार होता। - राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज



स्वभाव-संस्कार के मतभेद को सेवा में बाधा नहीं बनने दिया

बहुत बड़े संगठन में बड़े प्रोग्राम होते रहते हैं, तो कई बार स्वभाव-संस्कार के कारण अनेक मत भी देखने को मिलती हैं। एक बार मैंने दादी द्वारा सेवा समाचार पृष्ठ पर कहा कि दादी कई बार इतने स्वभाव संस्कार के विचारों के मतभेद होते हैं, तो क्यों हम ये बड़े प्रोग्राम करते हैं? दादी ने, मैं छोटी होते हुए जोकि मेरा रोल अनेक जगह जाने का होने के कारण दादी ने समझा कि इनको समझाना जरूरी है, तो मुझे दादी ने कहा कि देखो विचार भेद तो रहेंगे, क्योंकि हर आत्मा की अपनी सोच है। हरेक के अपने-अपने संस्कार हैं। अगर हम ये स्वभाव-संस्कार की बात देखते रहेंगे तो हम कभी भी बड़े प्रोग्राम नहीं कर सकेंगे। इसलिए हमें कभी भी इन बातों को महत्व नहीं देना है। हमारा फर्ज ये है, जो लक्ष्य बाबा ने दिया है विश्व की आत्माओं को संदेश देना, हमें उसी को महत्व देकर सभी के साथ मिलकर कार्य करना चाहिए। तो इससे मुझे महसूस हुआ कि देखो कि हम वैरायटी स्वभाव-संस्कार वाले होते भी दादी कितनी फोकस्ड थीं। अपने लक्ष्य पर केन्द्रित थीं कि हमें छोटी-छोटी बातों को माइंड करके सेवा को कभी रोकना नहीं चाहिए। क्योंकि हमारा मूल उद्देश्य जो है वो सेवा करना है।

- राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका

सत्यता की मूर्ति थीं इसलिए निर्भय थीं



दादी जब बॉम्बे में रहती थीं, हम भी बॉम्बे में ही रहते थे तो दादी किस रीति से ईश्वरीय संदेश देने के लिए उमंग और उत्साह के द्वारा नए-नए प्रोग्राम बनाके खुद भी बिजी रहती थीं और सर्व को बिजी रखती थीं क्योंकि उनको यही लगन थी कि हमें जो परमात्मा के द्वारा ज्ञान का प्रकाश मिला है, जिसके द्वारा हमारा जीवन सदा के लिए सुखी और शांत हुआ है, तो सारे विश्व में जो भी आत्मायें हैं, जो भी भाई-बहनें हैं उनको भी ये संदेश जरूर देना है। इसीलिए दादी जी सेवा में कभी भी थकती नहीं थीं। परन्तु अगरसर होकर सबके आगे, सबका लीडर बनके वो सेवाएं करती रहती थीं। दादी के अन्दर सत्यता होने के कारण दादी निर्भय थीं। दादी भरी सभा में अपना अनुभव सुनाती थीं कि मैंने जीवन में एक बारी भी झूठ नहीं बोला, दुनिया में ऐसी कोई हस्ती नहीं होगी जो इस रीति से हज़ारों भाई-बहन बैठे हों और उस समय अपना अनुभव बताये कि मैंने जीवन में कभी भी झूठ नहीं बोला। क्योंकि वो सत्यता के ऊपर चलने वाली, सत्य परमात्मा की सच्ची-सच्ची सीता थीं। उसको परमात्मा पिता के साथ इतनी लगन थी और जो भी परमात्मा पिता, बापदादा उनको जो भी डायरेक्शन देते थे उन डायरेक्शनों को वो उसी समय अमल में लाती थीं। - राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज

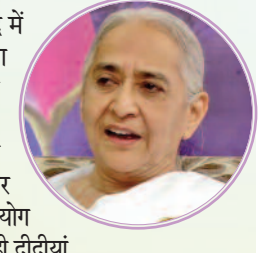
सेवाओं के साथ पालना करना भी सिखाया दादी ने

1976 में दादी ने मॉरीशियस से मधुबन में बुलाया क्योंकि मधुबन में विदेशी बहुत आ रहे थे। मुझे अनुभव हो चुका था विदेश में रहने का और विदेशियों की सेवा करने का। उन्होंने कहा कि अभी मधुबन में बहुत फॉरेनर्स आयेगे इसलिए आपको यहां सेवा करनी है। तो 1976 से मैं मधुबन में हूँ दादी के कहने पर। लेकिन जब मैंने मधुबन में रहना शुरू किया तो एक दिन दादी से मिलते हुए मैंने उनसे कहा कि मैं यहाँ मधुबन में सेवा तो करती हूँ लेकिन मैं और क्या विशेष ध्यान दूँ? तो दादी ने मुझे बहुत सुंदर बात कही। दादी ने मुझसे कहा कि शीलू, तुम टीचर तो बहुत अच्छी हो, ज्ञान बहुत अच्छा सुनाती हो, बहुत अच्छे लेक्चर देती हो, बहुत लोग प्रभावित होते हैं, विदेशी भी बहुत खुश होते हैं, लेकिन अभी तुमको एक काम और करना है। तो मैंने कहा कि दादी आप बतायें, तो दादी की एक विशेषता थी कि किसी की भी कमी-कमजोरी सीधा नहीं बोलती थीं। इसलिए मैंने कहा कि दादी आपने मेरी महिमा तो बहुत की लेकिन मेरी कोई कमी-कमजोरी हो तो वो भी बताओ। तो दादी ने कहा कि देखो, तुम टीचर बहुत अच्छी हो, लेकिन अब तुमको एक माँ की तरह सबको पालना देनी है। क्योंकि ये विदेशी आते हैं, उनको इस प्रकार की पालना चाहिए। बहुत प्यार चाहिए उनको। जितना आप उनको उस प्रकार का प्यार देंगे, बाबा की तरफ ले जायेंगे तो ये बाबा के पक्के बच्चे बन जायेंगे। क्योंकि मैं विदेशियों के साथ ही रहती थी, ट्रांसलेशन करना, ज्ञान सुनाना, क्लासेज कराना, यही मेरा पार्ट था मधुबन में। तो कैसे विदेशियों की सेवा करनी है और कैसे उनको बाबा के इतना नजदीक लाना है, ये दादी ने हमें सिखाया। - राजयोगिनी ब्र.कु. शीलू दीदी, उपाध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग

सेवाओं के नवीनतम प्रयोग को प्रोत्साहित कर

व्यापक बनाया

दादी को हमेशा नवीनता प्रिय थी। मैं अहमदाबाद में आई, बाद में पहला प्रोजेक्ट मैंने एक राजयोग शिविर का प्रारम्भ किया। 21 मई, 1973 को और फिर वो तीन दिन के राजयोग शिविर का समाचार मैंने दादी को लिखकर भेजा। दादी के पास पत्र पहुंचते ही दादी ने मेरे को फोन करके बुलाया और कहा कि चन्द्रिका तुमने राजयोग शिविर का जो प्रयोग किया है वो ये हमारी सारी दादियां हैं, ये हमारी बड़ी दीदीयां हैं इनको भी तुम ये अनुभव कराओ। तो मुझे संकोच तो बहुत हुआ लेकिन दादी ने कहा ये मनोहर दादी तुम्हारी बाजू में बैठेगी और तुम्हें ये जरूर कराना है। दादी भी बीच-बीच में आकर बैठ जाती थीं फिर तीन दिन के अनुभव के बाद दादी ने मुझे कहा कि चन्द्रिका यहाँ बैठो तुम और ये सारे लेक्चर की बुक तैयार करके दो। वो तैयार करके दी तो फिर कहा कि अभी इसकी ट्रेनिंग की बुक तैयार करके दो। दादी ने मुझे वहाँ बिठा दिया और मैंने दादी को सबकुछ लिखकर दिया। दादी ने उसी घड़ी उसकी लिथोकापी निकलवाई। और जो बहनें उस समय मिटिंग अर्थ आई हुई थीं उन सभी को तो उसी समय काँपी दे दिया और बाद में पूरे भारत के सभी सेवाकेन्द्रों पर दादी ने वो राजयोग शिविर की पुस्तिका भेजी और सभी को प्रेरित किया। इतने तक ही नहीं फिर दादी ने पाण्डव भवन में एक राजयोग भवन खास बनवाया। और वहाँ पर विआईपी के राजयोग शिविर का प्रारम्भ किया। तो दादी का कितना फोकस था। बाकी हम तो संस्था में एक नई टीचर थीं, लेकिन दादी सेवा के प्रति बहुत प्रोत्साहित करती थीं। - राजयोगिनी ब्र.कु. चन्द्रिका दीदी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, अहमदाबाद



दादी जी के साथ के कुछ अविस्मरणीय यादें...

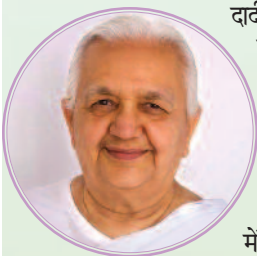
सिद्धि स्वरूप थे दादी के संकल्प



एक बार दादी को नैरोबी जाना था। ये 1981 अक्टूबर की बात है। तो दादी पाण्डव भवन के मेडिटेशन हॉल में नैरोबी जाने के लिए विदाई ले रही थीं। सभी भाई-बहनें इकट्ठे हो रहे थे दादी को विदाई देने के लिए। एक विदाई समारोह का ही आयोजन किया गया था। तो जब दादी मेडिटेशन हॉल की सीढ़ी उतर रहे थे तो मैंने दादी को ऐसे ही कहा कि मैं आज तक हवाई जहाज में ही नहीं चढ़ा। तो दादी ने कहा कि अच्छा, तुम हवाई जहाज में नहीं चढ़े! तुम नैरोबी चलोगे? बस उसी वक्त दादी ने मुझे कहा और मेरी सारी तैयारी अपने साथ नैरोबी ले जाने के लिए करवा दी। साथ में मोहिनी बहन थीं। नैरोबी में बहुत बड़ी ओरिजन ऑफ पीस कॉन्फ्रेंस होनी थी जिसमें केन्या के राष्ट्रपति को भी हिस्सा लेना था। मैं कभी हवाई जहाज में नहीं चढ़ा था तो बॉम्बे एयरपोर्ट पर मुझे ट्रॉली चलाना नहीं आ रहा था। ट्रॉली में सारा सामान रखने के बाद दादी ने मुझे खुद पकड़कर के ट्रॉली चलाकर दिखाया कि ट्रॉली ऐसे चलाई जाती है। उसके बाद जब हम नैरोबी एयरपोर्ट पर उतरे तो मैंने खुद ट्रॉली चलानी शुरू की तो दादी बहुत प्रसन्न हुए कि देखो अब इसको ट्रॉली चलाना आ गया।

दादी की संकल्प शक्ति बहुत पॉवरफुल थी। जब दिल्ली के पास ओआरसी की जमीन ली गई थी उस समय दादी को हम वो जमीन दिखाने के लिए कार में ले जा रहे थे। उस समय मेन गुडगांव रोड से उस जमीन तक जाने वाली जो सड़क है, उसको पटौटी रोड कहते हैं, वो बहुत टूटी-फूटी थी और हम जा रहे थे तो दादी ने मुझे कहा कि बृजमोहन, कम से कम ये सड़क तो ठीक करवा दो! तो मैं सोचने लगा कि उस एरिया का जो एमएलए है उसको कहूंगा ताकि इसका कुछ प्रबंध किया जाये। सभी हैरान होंगे ये जानकर कि बीस दिन के बाद वो सड़क अपने आप बननी शुरू हो गई। मैं खुद हैरान हो गया ये कौन बनाने लगा। तो मुझे पता लगा कि सरकार ने इसको स्टेट हाईवे डिक्लेयर कर दिया है और सरकार खुद ही उस सड़क को बना रही है। अर्थात् दादी की संकल्प सिद्धि इतनी अच्छी थी। - राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई, प्रति.महासचिव

हर सेवा कार्य को तुरन्त मूर्त रूप देतीं



दादी किसी भी नये विचार को बड़े स्तर पर अपनाने से पहले छोटे स्तर पर जाँचती थीं कि ये कार्य उचित परिणाम देगा या नहीं। वे केवल अच्छी प्रशासिका ही नहीं थीं बल्कि उनके भाषणों में चमत्कारिक शक्ति थी। देश-विदेश में उनके भ्रमण ने सभी को ब्रह्माकुमारीज की शिक्षाओं को जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी तथा वी.आई.पीज को संस्था से जुड़ने में बहुत सहायता की। अनेकों ने अपने जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए दादी के निर्देशन का लाभ उठाया। दादी ने इस ईश्वरीय यज्ञ की सेवाओं को परमात्म शक्ति की मदद से सारे विश्व में फैलाया। दादी में निर्णय की शक्ति बहुत प्रखर थी। वे महत्वपूर्ण निर्णय लेने में देर नहीं करती थीं, बल्कि उसे तुरन्त मूर्त रूप देती थीं। - राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. निर्मला दीदी, निर्देशिका, ज्ञानसरोवर

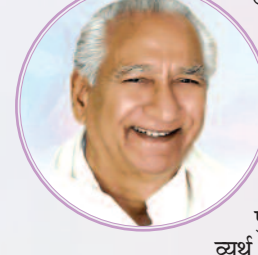
निश्चित और निर्विघ्न रहने का वरदान मिला



एक बार मैं दादी के सिर पर बाम लगा रही थी, अचानक दादी ने कहा, देखो रानी! बाबा सामने खड़ा है। फिर थोड़ी देर बाद रुककर दादी ने कहा, सारे दिन मैं कोई समय ऐसा नहीं होता जो बाबा मेरे सामने ना हो। दादी के अनुभवों की गहराई से निकले बोल मेरे हृदय में समा गये और मैं भी सारा दिन बाबा को अपने सामने देखने के पुरुषार्थ में लग गई।

एक बार मैंने दादी से कहा कि मैं जहाँ सेवा पर हूँ वहाँ पर मैं जाना नहीं चाहती। दो दिन के बाद दादी ने बुलाया और पूछा, कितनी बहनें सेवा पर वहाँ समर्पित हैं? मैंने बताया लगभग बारह बहनें हैं। दादी ने कहा कि अपने कारण नहीं लेकिन उन बहनों के कारण आप वहाँ जाओ और निश्चित होकर सर्विस करो। दादी की इस आज्ञा का पालन कर मैं सेवास्थान पर पहुँच गई और सारे विघ्न दादी ने समाप्त कर दिए। आज तक निश्चित और निर्विघ्न रहने का वरदान जो मिला वह सदा साथ दे रहा है। दादी मदद करती रही हैं और कर रही हैं। - राजयोगिनी ब्र.कु. रानी दीदी, मुजफ्फरपुर बिहार

दादी ने समय और शक्ति को कभी व्यर्थ न जाने दिया



दादी संगठन के हर सदस्य के गुण व विशेषताओं को ध्यान में रखकर, हरेक के भिन्न-भिन्न विचारों का समन्वय करने पर बल देती थी। एक-दो के विचारों को सम्मान देने के फलस्वरूप वो संगठन को आपसी स्नेह और एकता के सूत्र में बांध देती थी। वर्तमान पुरुषोत्तम संगमयुग के अमूल्य समय को व्यर्थ न गंवाकर इसे रचनात्मक कार्यों में लगाने की प्रेरणा दादी देती थीं और सदा इस बात का ध्यान रखती कि समय और शक्ति व्यर्थ न जाये, क्योंकि इन शक्तियों के कारण ही संगठन सुचारु रूप से चलता है। दादी सर्व आत्माओं की सूक्ष्म आत्मिक शक्ति के विकास के लिए समय प्रति समय अखण्ड योग तपस्या (भट्टी) के विशेष कार्यक्रम आयोजित करवाती थीं। - राजयोगी ब्र.कु. निरंजना भाई, महासचिव, ब्रह्माकुमारीज



लव को ही लौ मानकर एडमिनिस्ट्रेशन संभाला



एक बार दादी का इंटरव्यू लिया गया कि दादी आप इतनी कुशल प्रशासिका कैसे बनीं? तो दादी ने सुनाया कि मैं कभी अपने आपको प्रशासिका नहीं, माँ मानती हूँ। और ये सोचने से पहले ये लोग मेरे लिए क्या करें, मेरा कहना मानें मैं ये सोचती हूँ कि मैं इन सबके लिए क्या करूँ, जो सबको सुख दूँ? वन्दरफुल बाता। दूसरी बात दादी ने कहा कि मैं हमेशा ध्यान रखती हूँ कि कोई फैसला अकेले न लूँ। सबकी राय से लूँ। और वो व्यवहारिक स्वरूप से हमने देखा, ऐसा ही होता था। तीसरी बात दादी ने कही कि अपने इस पूरे विद्यालय में कहीं भी कुछ अगर गलत हुआ तो मैं उसको अपनी गलती मानती हूँ। इन सबके बावजूद भी हमने उनको सदा रिलेक्स, फ्रेश फरिश्ता देखा, इतनी जिम्मेवारी धारण करने के बावजूद भी क्योंकि उनको सदा याद रहता था कि मैं नहीं करती। मेरे द्वारा बाबा कराते हैं। चौथी बात उन्होंने बतायी, कोई भी अगर भूल करता तो उसके लिए तुरंत कोई भी निर्णय नहीं लेती हूँ। उसको तीन चांस देती हूँ। तीन चांस के बाद उसके लिए कोई भी निर्णय लिया जाता। तो ये सारी विशेषताएं ये सिद्ध करती हैं कि दादी बाबा पर कितना डिपेंड करते थे। और बाबा को सदा अंग-संग लेकर चलते थे। - राजयोगिनी ब्र.कु. अनीता दीदी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, चंडीगढ़

कथनी और करनी को समान बनाये जीवन को डिवशनरी बनाया



दादी का जीवन ही एक खुली किताब है। जिनके जीवन का एक-एक पन्ना पलटने से ही उमंग-उत्साह और साहस का स्विच ऑन हो जाता है। कथनी और करनी को एक समान बनाकर दादी ने जीवन को, हर प्रश्न का उत्तर देने वाली डिवशनरी बनाया। दादी सादगी और स्वच्छता की श्रृंगारी हुई प्रतिमूर्ति थीं। जीवन को त्याग और तपस्या से भरपूर कर ऐसा लाइट, माइट हाऊस बनाया जिससे चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश बिखरने लगा। उसी प्रकाश से आज यह विश्व विद्यालय प्रकाशित हो रहा है। उनके नयनों में रुहानियत, वाणी में मधुरता, कर्मों में कुशलता थी। दादी की एक-एक करनी से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। आज भी उनका व्यक्तित्व हमारे लिए प्रेरणास्रोत है। - राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी, क्षेत्रीय निर्देशिका, काठमाण्डू

परमात्मा के संदेश वाहक के रूप में दादी

मीडिया वाले जब व्यक्तिगत रूप से या कॉन्फ्रेंस में आते थे तो दादी सबसे मिलतीं और आध्यात्मिक ज्ञान के बारे में उमंग-उत्साह दिलाती थीं। ईश्वरीय सेवाओं को बढ़ते हुए देख दादी की शुभ इच्छा थी कि ईश्वरीय सेवाओं के समाचार से सभी लोग अवगत हों। उसी सम्बन्ध में सेवा समाचार जन-जन तक पहुँचाने हेतु 'ओमशान्ति मीडिया' पाक्षिक पत्रिका निकालने का निर्णय 1999 में लिया गया। जो आज उनके संकल्प का साकार रूप बखूबी निभा रहा है। दादी का उमंग सदा रहता था कि बाबा का संदेश सारे विश्व में पहुँचे। उसके लिए उन्होंने विश्व भर से 10,000 मीडिया वालों को बुलाने का संकल्प व्यक्त किया। उनके संकल्प से ही 'पीस ऑफ माइंड' चैनल उपलब्ध हुआ था। - राजयोगी ब्र.कु. करुणा भाई, अध्यक्ष, मीडिया विंग



खुद लाइट रहकर हमें भी लाइट रहना सिखाया

जब मैं पहली बार मधुबन में पार्टी लेकर जाने वाली थी, तो मैं असमंजस में थी कि मैं पार्टी संभाल पाऊंगी कि नहीं, लेकिन जब मैं पार्टी लेकर के गई तो दादी इतनी बड़ी होते हुए भी मुझे इतना निश्चित किया कि दिव्या तू पहली बार ये पार्टी लेकर आई है, कोई बात नहीं, तुझे कोई भी प्रकार की जरूरत हो, तो तुम मुझे कहना। और समय प्रति समय दादी मुझसे सब पूछती और हालचाल लेती रहती थीं। मैंने देखा कि पार्टी को मुझे संभालना था, लेकिन ये मुझे महसूस होता था दादी से कि दादी मुझे संभाल रही है। तो ये भी दादी के अंग-संग रहकर के उनकी विशेषताओं को मैंने देखा।

जब कभी सेवा की भी बात आती तो दादी हमें बहुत प्रोत्साहन देतीं, उसमें भी विशेष मेडिटेशन के, बाबा के प्यार के गीत बनाने की बात आती थी तो दादी हमेशा कहतीं मुझे कि दिव्या, तुम साल में एक बाबा के प्यार के, याद के गीतों की कैसेट जरूर बनाओ। और हम देखते थे कि इतनी व्यस्त होते हुए भी वे गीत के एक-एक शब्दों को ध्यान से पढ़तीं, पास करतीं और जब सीडी बन जाती तो दादी उन गीतों को भी बहुत ही ध्यान से, एकाग्रता से सुनती थीं और जब वे मुझे मिलती थीं तो दादी कहतीं कि मैंने माउण्ट आबू से आबू रोड आते हुए ये गीत सुना और बहुत ही बाबा की याद के गीत मुझे पसंद आये। तो ऐसे जो भी कलाएं हमारे जीवन में थी, दादी प्रोत्साहन देकर के हमें आगे बढ़ाती थीं। बॉम्बे से कुछ फिल्म कलाकारों को लेकर के एक टेली फिल्म बनाने के लिए हम माउण्ट आबू में गये थे। तब दादी ने सभी डिपार्टमेंट्स के भाई-बहनों से मिलकर इतना हमें उस कार्य के लिए सहयोग दिया, उमंग और उत्साह भरा। - राजयोगिनी ब्र.कु. दिव्यप्रभा दीदी, मुम्बई बोरीवली

दादी ने सभी की भावनाओं का कद्र किया

एक बार जब मैं माउण्ट आबू एक ग्रुप को लेकर आई तो चार-पांच दिन के लिए ही आई थी। वापस जाने का समय आया तो दादी ने कहा कि देखो यहाँ पर राज्यस्थान के राज्यपाल कोर्स करना चाहते हैं आप थोड़े दिन और रुक जाओ। मैंने कहा ठीक है। उसके बाद राज्यपाल कोर्स कर कुछ दिन रहने के बाद चले गये। लेकिन जैसे ही ज्ञान सरोवर का निर्माण होने लगा तो दादी के मन में ये भावना जागृत हुई कि अभी और हैंड्स को बढ़ाना होगा।

उस समय दादी एडमिनिस्ट्रेटिव हेड थीं और आराम से मुझे कह सकती थीं कि देखो आपको यहाँ रहना है, लेकिन फिर भी दादी ने बहुत सुन्दर तरीके से एक दिन मुझे बुलाकर कहा कि देखो ऊषा, बाबा के बेहद यज्ञ के कार्य का विस्तार हो रहा है, दादी की भावना है कि आप यहाँ रहो। ताकि अनेक ऐसे वीआईपीज गैस्ट आते हैं उनकी सेवा कर सकें। लेकिन फिर भी दादी आपको च्वाँइस देती है कि अगर आप सेन्टर पर जाना चाहती हैं तो दादी आपको रोकेगी नहीं। बढ़िया सेन्टर देकर आपको सेन्टर पर भी अवश्य छुट्टी देंगी जाने की। तब मुझे महसूस हुआ कि दादी इतनी बड़ी एडमिनिस्ट्रेटिव हेड, वो मुझे सीधा ऑर्डर कर सकती हैं यहाँ रहने के लिए, लेकिन दादी ने ऐसा नहीं कहा। दादी ने कहा कि आपकी च्वाँइस जो होगी उसको दादी भी रिस्पेक्ट करेगी। मुझे अन्दर इतना दिल में लगा अगर ऐसी महान आत्मा के संग मुझे रहने को मिले तो मुझे अपने जीवन में कितना कुछ सीखने को मिलेगा। और फिर मैं माउण्ट आबू रुक गयी। - राजयोगिनी ब्र.कु. ऊषा दीदी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, माउण्ट आबू

दादी नम्रता व प्रेमपूर्ण व्यक्तित्व की धनी थीं

हमारी दादी माँ मम्मा के बाद माँ के रूप में पालना देने के निमित्त बनीं। दादी निरहंकारी थीं, उसे हम एक अनुभव से बताना चाहेंगे। एक बार किसी कार्यक्रम में गेट पर खड़े भाई ने एसडीएम को कार्यक्रम में प्रवेश होने नहीं दिया। तो वे काफी नाराज हो गये और वहाँ एक बहस का वातावरण बन गया। तभी वहाँ से दादी गुजर रही थीं। उन्हें जब इस बात का पता चला तो उन्होंने एसडीएम से बड़े प्यार से सम्मान पूर्वक बात की और उस गेट पर खड़े भाई की तरफ से माफी मांगते हुए उन्हें अंदर चलने को कहा। एसडीएम को जब पता चला कि वे इस संस्था की मुख्य प्रशासिका हैं तो वह उनके समक्ष नतमस्तक हो गया। दादी नम्रता व प्रेमपूर्ण व्यक्तित्व से सबको अपना बना लेती थीं। - राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी दीदी, अध्यक्ष महिला प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज





दादी प्रकाशमणि जी से दृष्टि लेते हुए भारत के प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी।



दादी जी से स्नेह मुलाकात करते हुए तत्कालिन राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम। साथ हैं राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी, ज्वाइंट चीफ ऑफ ब्रह्माकुमारीज।



तत्कालिन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी से मिलते हुए दादी प्रकाशमणि जी। साथ हैं ब्र.कु. मोहिनी दीदी, ब्र.कु. मुन्नी दीदी, तथा ब्र.कु. आशा दीदी।



कार्यक्रम में दादी प्रकाशमणि जी से मिलते हुए तत्कालिन उपराष्ट्रपति आर.वेंकटरमन।



दादी जी के साथ जी.सी.बी.डब्ल्यू कॉन्फ्रेंस का दीप प्रज्वलित करते हुए सैफरनचक अंडर सेक्रेटरी जनरल ऑफ यू.एन, भारत के तत्कालिन प्रधानमंत्री राजीव गांधी तथा अन्य।



दादी जी के साथ कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन करते हुए तत्कालिन भारत प्रधानमंत्री पी.वी नरसिम्हा राव, राज्यस्थान के राज्यपाल डॉ. चेन्ना रेड्डी तथा अन्य।

आध्यात्मिक सेवाओं के मुख्य मुकाम

1937 : ब्रह्माकुमारी संस्था की स्थापना का समय। इस समय दादी जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन ईश्वरीय सेवार्थ समर्पित किया।

1954 : ब्रह्माकुमारी संस्था का प्रतिनिधि मंडल दादी जी के नेतृत्व में 'द्वितीय विश्व धर्मसभा' में भाग लेने जापान गया। छः मास के इस प्रवास के दौरान हांगकांग, सिंगापुर, इंडोनेशिया इत्यादि देशों में जाकर वहाँ के लोगों को आध्यात्मिक ज्ञान व राजयोग मेडिटेशन का प्रशिक्षण दिया।

1977 : विश्व के पाँचों महाद्वीपों में 'पवित्रता के द्वारा विश्व शांति की आशा' कार्यक्रम द्वारा विश्व के राजनीतिज्ञों, धर्म नेताओं तथा अनेक संस्था के प्रमुखों को परमात्म संदेश प्रदान किया गया।

1978 : 'वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस ऑन फ्यूचर मेनकाइंड' का आयोजन दिल्ली में हुआ जिसका उद्घाटन भारत के उपराष्ट्रपति बी.डी. जत्ती ने किया।

1980 : 'वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस ऑन ह्यूमन सरवाइवल' का आयोजन बैंगलोर विधानसभा के बैंक्वेट हॉल में किया गया।

1981 : ब्रह्माकुमारी संस्थान को संयुक्त राष्ट्र संघ में गैर सरकारी संगठन(एन.जी.ओ.) के रूप में शामिल किया गया। इसी वर्ष 'द ओरिजन ऑफ पीस' कॉन्फ्रेंस का आयोजन नैरोबी में किया गया।

1983 : प्रथम 'यूनिवर्सल पीस कॉन्फ्रेंस' का आयोजन आबू पर्वत में किया गया जिसका उद्घाटन धर्मगुरु दलाई लामा ने किया।

1984 : अमेरिका, ब्रिटेन और यूरोप सहित 13 देशों में दादी जी ने दौरा किया और अनेक अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंसेज को सम्बोधित किया। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा पीस मेडल से संस्था को सम्मानित किया गया। द्वितीय 'यूनिवर्सल पीस कॉन्फ्रेंस' का उद्घाटन गुजरात के तत्कालीन राज्यपाल आर.के. त्रिवेदी ने किया।

1985 : तृतीय 'यूनिवर्सल पीस कॉन्फ्रेंस' का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन राजस्थान के राज्यपाल ओ.पी. मेहरा ने किया। संयुक्त राष्ट्र द्वारा इस वर्ष को 'ईयर ऑफ यूथ' घोषित करने पर संस्था द्वारा 'भारत यूनिटी यूथ फेस्टिवल तथा युवा पदयात्रा' का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन भारत के राष्ट्रपति महामहिम ज्ञानी जैल सिंह द्वारा किया गया।

1986 : संस्था का गोल्डन जुबली वर्ष मनाया गया। चौथे 'यूनिवर्सल पीस कॉन्फ्रेंस' का आयोजन किया गया। 88 देशों में 'मिलियन मिनट्स ऑफ पीस' कार्यक्रम की लॉन्चिंग की गई।

1987 : संस्था को संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 'पीस मैसेंजर अवॉर्ड' प्रदान किया गया। संयुक्त राष्ट्र के सेक्रेटरी जनरल ने दादी जी को अवॉर्ड भेंट किया। प्रथम 'इंटरनेशनल होलिस्टिक हेल्थ कॉन्फ्रेंस' का आयोजन आबू पर्वत में किया गया।

1988 : ग्लोबल कोऑपरेशन फॉर ए बेटर वर्ल्ड नामक 2 साल के अंतर्राष्ट्रीय प्रोजेक्ट की लॉन्चिंग की गई जिसके अंतर्गत 122 देशों में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। 'ऑल इंडिया स्पीरिचुअल कॉन्फ्रेंस' का आयोजन आबू पर्वत में किया गया जिसका उद्घाटन बद्रिकाश्रम के जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी शांतानंद सरस्वती ने किया।

1989 : अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस 'ग्लोबल कोऑपरेशन फॉर ए बेटर वर्ल्ड' का आयोजन आबू पर्वत में किया गया जिसका उद्घाटन उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति सी. राय ने किया। 'ऑल इंडिया मोरल अवेकनिंग यूथ कैम्पेन' का आयोजन दिल्ली में किया गया जिसका उद्घाटन उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति रंगनाथ मिश्रा ने किया।

1990 : द्वितीय 'ग्लोबल कोऑपरेशन फॉर ए बेटर वर्ल्ड' नामक अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी द्वारा किया गया। तृतीय 'इंटरनेशनल होलिस्टिक हेल्थ कॉन्फ्रेंस' का आयोजन बेलगाम में किया गया। 'ऑल इंडिया एन्वायरमेंट अवेयरनेस कैम्पेन' का आयोजन किया गया।



कार्यक्रम में दादी जी के साथ प्रेसिडेंट ऑफ यू.एन. जनरल एसेंबली एस.आर. इन्सानली तथा वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा।



दादी प्रकाशमणि जी को पीस मेडल से सम्मानित करते हुए यू.एन. सेक्रेटरी जनरल डॉ. परवेज डेवयूलर।



आध्यात्मिक कार्यक्रम में दादी प्रकाशमणि के साथ हैं काशी के जगद्गुरु, राजयोगिनी दादी जानकी तथा अन्य।



आध्यात्मिक शक्ति दादी प्रकाशमणि जी से मिलते हुए भारत रत्न से सम्मानित मदर टेरेसा।

For Online Transfer

BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan, Talhati
ACCOUNT NAME:- OM SHANTI MEDIA
ACCOUNT NO:- 7482096871,
IFSC - CODE:- IDIB000S319

Note:- After Transfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न-5, आबू रोड, राज. 307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414182088
Email-omshantimedia@bkivv.org
सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - 240 रुपये, तीन वर्ष - 720 रुपये, आजीवन - 6000 रुपये
Website: www.omshantimedia.org

परमात्म ऊर्जा



ज्ञान सूर्य की किरणें न चाहते भी अपने में धारण होते हुए अनुभव करेंगे लेकिन तब जब बाप के सदा सम्मुख होंगे। जो सदा बाप को सम्मुख अनुभव करते हैं, उन्हीं की सूरत पर क्या दिखाई देगा जिससे आप स्वयं भी सम्मुख रहते हैं उन्हीं की सूरत पर क्या रहता है? साकार में सम्मुख रहने का तो सहज अनुभव कर सकते हो। बहुत पुराना शब्द है। रिवाइज कोर्स चल रहा है ना, तो पुराना शब्द भी रिवाइज हो रहा है। यह भी बुद्धि की ड्रिल है। बुद्धि में मनन करने की शक्ति आ जायेगी। अच्छा, एक तो उनकी सूरत पर अन्तर्मुखता की व अन्तर्मुखी की झलक रहती है और दूसरा अपने संगमयुग की और भविष्य की सर्व स्वमान की फलक रहती है। समझा?

एक झलक दिखाई देती है, दूसरा फलक दिखाई देती है। तो ऐसे सदैव न सिर्फ फलक दिखाई दे लेकिन झलक भी दिखाई दे, हर्षितमुख के साथ अन्तर्मुखी भी दिखाई दे- ऐसे को कहा जाता है सदा बाप के सम्मुख रहने वाले प्रीत बुद्धि। अगर सदा यह स्मृति रहे कि इस तन का किसी भी समय विनाश हो सकता है, तो यह विनाश काल स्मृति में रहने से प्रीत बुद्धि स्वतः हो ही जायेगी। जब विनाश का काल आता है तो अज्ञानी भी बाप को याद करने का प्रयत्न जरूर करते हैं, लेकिन परिचय के बिना प्रीत जुट नहीं पाती। अगर यह सदा स्मृति में रखो कि यह अन्तिम घड़ी

है, अन्तिम जन्म नहीं अन्तिम घड़ी है, यह याद रहने से और कोई भी याद नहीं आयेगा। फिर ऐसे सदा प्रीत बुद्धि हो? श्रीमत के विपरित तो नहीं चलते हो? अगर मन्सा में भी श्रीमत के विपरित व्यर्थ संकल्प व विकल्प आते हैं तो क्या प्रीत बुद्धि कहेंगे? ऐसे सदा प्रीत बुद्धि रहने वाले विजयी रत्न बन सकेंगे।

विजयी रत्न बनने के लिए अपने को सदा प्रीत बुद्धि बनाओ। नहीं तो ऊंच पद पाने के बजाय कम पद पाने के अधिकारी बन जायेंगे। तो सभी अपने को विजयी रत्न समझते हो? कहाँ भी किस प्रकार से कोई साथ प्रीत न हो, नहीं तो विपरित बुद्धि की लिस्ट में आ जायेंगे। जैसे लोगों को प्रदर्शनी में संगम के चित्र पर खड़ा करके पूछते हो कि अभी आप कहाँ हो और कौन हो? संगम पर खड़ा करके क्यों पूछते हो? क्योंकि संगम है ऊंच ते ऊंच स्थान व युग। इसी प्रकार अपने आप को ऊंची स्टेज पर खड़ा करो और फिर अपने आप से पूछो कि मैं सदा प्रीत बुद्धि हूँ? व नहीं हूँ व कभी प्रीत बुद्धि की लिस्ट में आते हो, कभी निकल जाते हो? अगर अब तक भी सदा प्रीत बुद्धि नहीं बने अर्थात् कहाँ न कहाँ सूक्ष्म रूप में व स्थूल रूप में किस से भी, कहाँ भी प्रीत लगी हुई है तो वर्तमान समय जबकि पढ़ाई का कोर्स समाप्त हो और रिवाइज कोर्स चल रहा है, तो इससे समझना चाहिए परीक्षा का समय कितना समीप है।

स्वास्थ्य

अमूमन बालों को पोषण देने के लिए आंवला, बादाम या नारियल के तेल का प्रयोग किया जाता है। पर कुछ ऐसी प्राकृतिक चीजें भी हैं

रोकने के साथ ही डैंड्रफ और ड्राई स्कैल्प से निजात भी दिलाता है। ये स्कैल्प व बालों के पीएच को संतुलित रखकर इन्हें मजबूती देता है। ऐसे बनाएं... आधा कप एलोवेरा जैल में आधा कप नारियल तेल मिलाएं। मात्रा कम या ज्यादा करने

ऐसे बनाएं... आधा कप गुड़हल के पत्ते और 2 गुड़हल के फूल धोकर धूप में सुखा लें। एक पैन में 3 चम्मच नारियल का तेल और 3 चम्मच बादाम तेल डालकर सूखे हुए फूल और पत्तियां भी डालें। मध्यम आंच पर 5

ये चीजें हैं बड़ी कमाल की

जिन्हें इन तेलों में सही तरीके से मिलाने पर न सिर्फ बालों की लम्बाई बढ़ेगी बल्कि इनके नियमित प्रयोग से वे मजबूत और चमकदार भी बनेंगे।

बालों के बढ़ने में करे मदद

किसी सब्जी के स्वाद को बढ़ाने के लिए प्रयोग किए जाने वाला कढ़ी पत्ता आपके बालों के स्वास्थ्य को भी बढ़ा सकता है। कढ़ी पत्ते में पोषक तत्व जैसे, एंटीऑक्सीडेंट और अमीनो एसिड भरपूर मात्रा में होते हैं जो बालों की जड़ों को मजबूत करके बालों को पतला होने और झड़ने से रोकते हैं।

ऐसे बनाएं... एक मुट्ठी कढ़ी पत्ता लेकर उसे धूप में सुखा लें। अच्छी तरह सूख जाने के बाद इसे 100 मिली नारियल तेल में मिलाकर तेल के आधा होने तक उबालें। अब पतले छेद वाली छन्नी या किसी कपड़े से इसे छान लें। और सप्ताह में कम से कम दो बार प्रयोग करें।

बालों को झड़ने से रोके

एलोवेरा, विटामिन, अमीनो एसिड और खनिजों से भरा होता है, जो बालों की ग्रोथ को बढ़ाता है। रूखे बालों को मॉइश्चराइज करने और बालों का झड़ना



हमारे रोजमर्रा की जिंदगी में उपयोग में आने वाली बहुत-सी चीजें ऐसी हैं जिन्हें हम उपयोग तो कर रहे हैं लेकिन हमें ये नहीं मालूम होता कि इन चीजों का और कहाँ-कहाँ और किस-किस चीज के लिए उपयोग में लाया जा सकता है। कुछेक ऐसी ही प्राकृतिक चीजें हैं जिनके बारे में हम आपको बतायेंगे कि इनका और कहाँ-कहाँ उपयोग किया जा सकता है...

की स्थिति में सुनिश्चित करें कि एलोवेरा जैल और नारियल तेल बराबर मात्रा में होना चाहिए। इस मिश्रण को 5-7 मिनट तक मध्यम आंच पर गर्म करें। पूरी तरह ठंडा होने पर कुछ बूंदें रोजमेरी एसेंशियल ऑयल की डालें। अब इसे बोतल में भरकर ठंडी व अंधेरी जगह पर रखें और उसके बाद इस्तेमाल करें।

बालों को बनाए चमकदार

आयुर्वेद में, गुड़हल के फूल को बालों की ग्रोथ और अच्छे स्वास्थ्य के लिए सबसे बेहतरीन जड़ी-बूटी माना गया है। इसमें अमीनो एसिड, विटामिन ए, सी और कैल्शियम, फाइबर, आयरन व वसा जैसे पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। इससे बालों का झड़ना कम किया जा सकता है। नियमित इस्तेमाल से बालों को चमकदार व मुलायम भी बनाया जा सकता है।

मिनट गर्म करके ठंडा कर लें। तेल को बोतल में छानकर अलग कर लें और एक सप्ताह तक किसी ठंडे स्थान पर रखें। इस तेल को जब भी इस्तेमाल करें तो उससे पहले थोड़ा गर्म कर लें।

रूखी घटाने में करे मदद

नीम में विटामिन ई, सी, लिनोलिक एसिड, ओलिक एसिड जैसे तत्व मौजूद होते हैं जो बालों के स्वास्थ्य को बेहतर रखते हैं। इसके अलावा डैंड्रफ मुक्त व मजबूत बनाकर गंजेपन से निजात भी दिलाते हैं। ऐसे बनाएं... नीम के कुछ पत्ते लेकर सुखा लें। इन्हें 100 मिली बादाम के तेल में उबालें। तैयार तेल को पत्तियों के साथ ही 1 सप्ताह तक किसी ठंडे स्थान पर रखें जिससे इसका रंग हरा हो जाए। फिर तेल को छानकर बोतल में रख लें। उंगलियों के पोरों की सहायता से मालिश करके बाल झड़ने और जू होने जैसी समस्याओं से बचा जा सकता है।



नेपाल-काठमांडू। नेपाल के नवनिर्वाचित सम्माननीय उपराष्ट्रपति रामसहाय प्रसाद यादव को काठमांडू लैनचौर स्थित उनके निवास पर ब्रह्माकुमारीज राजयोग सेवाकेन्द्रों की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों ने सम्मानित कर बधाई एवं शुभकामनाएं दी। साथ ही उपराष्ट्रपति को नेपाल एवं विश्व में ब्रह्माकुमारीज द्वारा हो रही ईश्वरीय सेवाओं से अवगत कराया।



जयपुर-वैशाली नगर(राज.)। ब्रह्माकुमारीज के राजयोग भवन सेवाकेन्द्र में अंतर्राष्ट्रीय योग महोत्सव के 21 दिवसीय कार्यक्रमों के तहत 'योग समागम' कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में नगर निगम महापौर श्रीमति सौम्या गुर्जर, ब्रह्माकुमारीज जयपुर की उपक्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुष्मा दीदी व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों सहित बड़ी संख्या में मीडिया जगत से जुड़े गणमान्य लोग शामिल रहे। इस मौके पर योग समागम के पोस्टर का विमोचन भी किया गया।



बहल-हरियाणा। राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी के 11वें पुण्य स्मृति दिवस के अवसर पर आयोजित जल जन अभियान कार्यक्रम में आने पर जल एवं पर्यावरण संरक्षण चेतना अभियान के संयोजक महंत बाल योगी चरणदास जी महाराज को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शकुंतला बहन। साथ हैं 52 बार रक्त दान करने वाले रक्त वीर समाजसेवी रमेश सैनी तथा ब्र.कु. पूनम बहन।



नगर-राज। सुप्रसिद्ध कथा वाचिका देवी चित्रलेखा जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. हीरा बहन, ब्र.कु. संतोष बहन एवं ब्र.कु. तारेस बहन।



ज्ञानसरोवर-मा.आबू। ज्ञानसरोवर परिसर के हार्मनी हॉल में ब्रह्माकुमारीज के युवा प्रभाग द्वारा 'आध्यात्मिक युवा संसद : खुशहाल और बेहतर विश्व' विषय पर आयोजित अखिल भारतीय युवा सम्मेलन में संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. निर्मला दीदी, युवा प्रभाग की वाइस चेयरपर्सन राजयोगिनी ब्र.कु. चन्द्रिका दीदी, प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. कृति बहन, राजस्थान यूथ बोर्ड के मेम्बर कैलाश चंद्र पहाड़िया, कुमार मनीष, यूनाइटेड नेशंस प्रोग्राम एनालिस्ट जयपुर, ब्र.कु. जीतू भाई, ब्र.कु. अरुण भाई, ब्र.कु. गीता बहन, भीनमाल सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों शामिल रहे।



भाई-
बहन के रिश्ते

करेगा। लेकिन शब्द है रक्षाबंधन।
और त्योहार है
पवित्रता का।
इस का
मतलब
पवित्रता से हमारी रक्षा
होती है। आप घरों में देखेंगे,
कई बार भाई बड़ा होता है,
बहन छोटी होती है और कई स्थानों पर बहन
बड़ी है, भाई छोटा है, तो अब आप ही

बहुत ब्रह्मचर्य व्रत करके इतना मान प्राप्त
करते हैं, इसी के एवजे में उन्हें सुख-सम्पत्ति
सब कुछ मिल जाती है, लेकिन वहीं अगर
उनसे कुछ गलती हो जाये तो सबकुछ छिन
भी जाता है। परमात्मा की एक और बात
अंडरलाइन करने वाली है, कि इस देह से
सभी जो भी कर्म करते हैं उस कर्म में काम,
क्रोध, मोह अवश्य होता है। लेकिन पवित्रता
वो है जो हमको सुख भी देती है, शांति भी
देती है और सुरक्षा भी देती है। इस दुनिया
में मुक्ति को लोगों ने बहुत बड़ा विषय माना,

माना इस शरीर में रहते हुए भी हम
जीवनमुक्त अवस्था का अनुभव भी करेंगे।
क्योंकि रक्षासूत्र में एक संकल्प का धागा है
कि चाहे कुछ हो जाये मैं न परमात्मा का
साथ छोड़ूंगा और न पवित्रता का व्रत
तोड़ूंगा। ये संकल्प का धागा जो बांधता है
उसकी रक्षा परमात्मा के द्वारा सुरक्षित हो
जाती है।

आजकल तो बस एक-आधे घंटे के लिए
हर कोई घर में जाता है, सब अपने-अपने
घरों में रहते हैं, कब किसके ऊपर विपत्ति



भारतीय परंपरा में त्योहारों को लेकर हम
बहुत उत्सुक रहते हैं। और सारे त्योहारों के
लिए भी कहा जाता है कि इसके पीछे कोई
मार्मिक कहानी है। मार्मिकता इस कारण से
भी है कि जो लोग कहानी बनाते हैं या जो
कहानी बनी उससे बहुत बड़ी सीख हम
सबको मिलती है। लेकिन जीवन की आज
की मनोस्थिति को देखा जाये तो इतने वर्षों
से हम इन त्योहार को मनाते हैं और विशेष
रूप से यह त्योहार भाई-बहन के बीच में
मनाया जाता है। मतलब पवित्रता का मूल

में छिपा हुआ है। इसको बहुत साधारण भाषा
में समझें, सरल भाषा में समझें तो कह
सकते हैं कि जब किसी भी व्यक्ति को
देखकर सिर्फ और सिर्फ ऐसे भाव उत्पन्न
हों जिसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, नहीं हो
तो यह बंधन उसको बांधा जा सकता है।
इस त्योहार का महत्व जो परमात्मा हमको
बताते, वो यही बताते कि सबने पवित्रता
के बंधन को इस तरह से दुनिया में बनाया
कि अगर भाई-बहन के रिश्ते के साथ अगर
इसे जोड़ा जायेगा तो ये कुछ हद तक काम

बताएगा, छोटा भाई बड़ी बहन की रक्षा कैसे
कर पायेगा। वह तो खुद ही छोटा है।
इसलिए ये त्योहार समाज को कुछ
दृष्टिकोण देने वाला है। क्योंकि जो पवित्र
है इस दुनिया में, उसके लिए देखो सभी
कितना सोचते हैं!
कोई ऋषि-मुनि-तपस्वी भी हमारे बीच
में आ जाये तो भी हम अपना स्थान
छोड़कर खड़े हो जाते हैं, सिर्फ एक
शारीरिक पवित्रता के बल से। परमात्मा
कहते कि जब इस दुनिया में लोग थोड़ा-

ऐसा बंधन जो हमें मुक्ति दे, जीवनमुक्ति दे

लेकिन मुक्ति भय से, चिंता से, विकारों से
डर से होनी चाहिए न कि शरीर छूट जाये,
उसे मुक्ति कहा जाता है। तो परमात्मा ने
आकर के हमें रक्षाबंधन के सही अर्थ को
समझाया कि इस दुनिया में अगर तुमको
दुःख से, चिंता से, डर से यदि मुक्ति मिलती
है तो उसका एकमात्र आधार होता पवित्रता
का रक्षासूत्र बांधना। और वो रक्षासूत्र हम
सभी को हर पल यहां के डर, भय, चिंता
से मुक्त रखेगा और यहीं पर रहते हुए हम

आई उस समय कौन रक्षा करेगा! उस
समय सिर्फ रक्षा करने का एक ही सहारा
है, एक ही आधार है, वो है शिव परमपिता
परमात्मा जो हमको रक्षाबंधन के सही अर्थ
को समझाते हैं। उनका सिर्फ एकमात्र कहना
है योगी बनो, पवित्र बनो। उसी को दुनिया
ने त्योहार बना लिया। जो योगी और पवित्र
हैं वो मुक्त भी हैं और जीवनमुक्त भी हैं। तो
चलो इस रक्षाबंधन पर्व पर हम भी ऐसा
रक्षासूत्र परमात्मा से बंधवायें।



ब्र.कु. शिवानी बहन, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

निःस्वार्थ सेवा ही है सफलता का आधार

कहीं न कहीं बचपन में हमने
सीख लिया कि रिश्तों में देना
भी है और लेना भी है।
रिलेशनशिप मिन्स देना और
लेना। मुझे कौन देगा? मुझे
कौन देगा? मैं कैसे सबको दूँ?

पहले अपनी बैटरी को चार्ज करना है और
फिर वह बैटरी से सारा दिन सबको शक्ति
देते जाना है। सेवा एक कॉन्शियसनेस है।
अगर हम उस कॉन्शियसनेस से चलें तो
हम घर पर भी सेवा करेंगे, ऑफिस में भी
सेवा करेंगे, समाज में भी सेवा करेंगे।
अगर हम उस कॉन्शियसनेस से नहीं चलेंगे
तो जो हम इतनी ठण्डी-ठण्डी सेवा कर
रहे होते हैं ना वो भी सेवा नहीं होती है,
क्योंकि उस सेवा में भी हमें कुछ चाहिए
होता है। होता चाहिए या नहीं? और कुछ
नहीं तो मुझे कोई बोल ही दे बड़ी अच्छी
सेवा की। मैंने इतनी सेवा की किसी ने
कहा भी नहीं कि मैंने अच्छी सेवा की।
मैंने इतनी सेवा की मेरा मैग्जीन में नाम
भी नहीं आया। मैंने इतनी सेवा की मेरी
कोई महिमा भी नहीं हुई। की हुई चीज के
लिए क्या महिमा एक्सपेक्ट करना सही

है? नहीं।
हर रोज अपने को एक दुआ दीजिए-
मुझे किसी से कुछ नहीं चाहिए। हमारे साथ
कोई व्यवहार अच्छा ना कर रहा हो तो क्या
हम उनसे प्यार से बात कर सकते हैं?
अच्छा लेकर आइए सामने, सामने वाला
हमसे ठीक से बात नहीं कर रहा आपने
किसी को अपने सामने देखा, आप जानते
हैं उसको, आप जाने लगे थे उनसे मिलने
के लिए लेकिन वो मुँह मोड़ के उस तरफ
चले गए, सीधा-सीधा इग्नोर। क्या आप
उनके पास जाकर प्यार से और सम्मान
से बात कर सकते हैं? कर सकते या नहीं
कर सकते? करेंगे या छोड़ देंगे? कहेंगे,
अगर उनको ही बात नहीं करनी है तो हम
क्यों करें, छोड़ो। मैं ही हर बार झुकूँ सबके
लिए, मुझे क्या फर्क पड़ता है, यह अहंकार
जो हमें झुकने नहीं देता। मन को झुकने
नहीं देता, तो शरीर भी अकड़ने लग जाता
है। इसलिए झुकना सेहत के लिए बहुत
फायदेमंद है। शरीर का भी झुकना और
मन का भी झुकना।
जितनी बार मन को झुकने का चांस
मिले उतना झुक जाना चाहिए स्वस्थ रहेंगे।

शरीर को नहीं, मन को जितनी बार झुकने
का चांस मिले, शरीर स्वस्थ रहेगा। यह
नहीं गिनना चाहिए कि मैं क्यों झुकूँ, मैं
क्यों चुप रहूँ, मैं ही बार-बार करूँ! क्यों
न करूँ, मैं स्वस्थ हूँ तो मैं झुक सकता
हूँ, हो सकता है सामने वाला बीमार हो,
इसलिए वो झुक नहीं सकते। जो झुक नहीं
सकते मतलब वो क्या हैं, वो तंदरुस्त नहीं
हैं। तो झुकने को गिनना नहीं चाहिए- मैं
ही कितनी बार झुकूँ, मैं ही कितनी बार
झुकूँ, झुको, जितनी बार झुकेंगे उतना शरीर
के लिए भी अच्छा है। सामने वाला गलत
व्यवहार कर रहा है, वो अपने मन की
स्थिति से डिस्टर्ब है, वो परेशान है, हम
क्यों परेशान हो जाते हैं उसके व्यवहार को
देखकर? क्योंकि हमने अपने मन में उस
बात को पकड़ के रखा है कि वह ठीक
नहीं तो मैं डिस्टर्ब होंगी। लेकिन जब हमें
ये याद रहेगा कि वो ठीक नहीं वो उनके
मन की स्थिति है, मेरे मन की स्थिति तो
बिल्कुल ठीक है तो मैं तो प्यार से और
सम्मान से बात कर सकती हूँ। या नहीं
कर सकती हूँ?
फिर से आँख बंद कीजिए और अपने

सामने किसी एक व्यक्ति को चुन लीजिए,
जो बार-बार, कुछ-कुछ, थोड़ा-थोड़ा,
अलग-अलग व्यवहार करते रहते हैं पर
आज पक्का कीजिए इनका संस्कार इनका
है, यह इनका संस्कार है, ये भी बदल
जायेंगे फिलहाल ये इनका संस्कार है।
लेकिन मेरा संस्कार क्या है शांत रहना,
प्यार से बात करना, सम्मान देना, धैर्यता
से बात करना यह मेरा संस्कार है और
आज से मैं आत्मा यह पक्का करती हूँ,
सिर्फ एक व्यक्ति के साथ पक्का कर लो
अभी।
आज से मैं पक्का करती हूँ कि जब-
जब भी यह ऐसा व्यवहार करेंगे वह अपने
संस्कार से करेंगे, लेकिन मैं अपने संस्कार
से करूँगी। अपने आप को देखिए अभी
करते हुए क्योंकि उस क्षण जब आप
अपने सही संस्कार के थू करेंगे तो आप
अपने लिए खुशी बढ़ा रहे हैं। आप अपने
शरीर के लिए स्वास्थ्य बढ़ा रहे हैं, आप
अपने घर के वातावरण में सुकून बढ़ा रहे
हैं और आप सामने वाले को भी शक्ति दे
रहे हैं। सिर्फ अपने संस्कार को पकड़ कर
रख कर।

सेवा एक कॉन्शियसनेस है।
अगर हम उस कॉन्शियसनेस
से चलें तो हम घर पर भी
सेवा करेंगे, ऑफिस में भी
सेवा करेंगे, समाज में भी
सेवा करेंगे। अगर हम उस
कॉन्शियसनेस से नहीं चलेंगे
तो जो हम इतनी ठण्डी-ठण्डी
सेवा कर रहे होते हैं ना वो भी
सेवा नहीं होती है, क्योंकि
उस सेवा में भी हमें कुछ
चाहिए होता है। होता चाहिए
या नहीं?



आज हम आपको एक ऐसे आयाम की तरफ ले चलते हैं मनुष्यों की जो हमेशा हमको एक सीख दे जाती है, लेकिन वो सीख लेने के बाद भी हम बदलते नहीं हैं। इस दुनिया में हर एक मनुष्य की अपनी-अपनी विशेषता है। और सभी अपनी-अपनी विशेषताओं के आधार से कार्य भी कर रहे हैं। लेकिन उस विशेषता को पूरी तरह से अपनाना, अब यहां हम उसे अपना तो लेते हैं लेकिन बार-बार उस चीज का उदाहरण देते हैं, उस व्यक्ति का उदाहरण देते हैं कि ये चीज मैंने इनसे सीखी। बहुत अच्छी बात है, अगर हमने एक बात किसी से सीखी है तो सीखने का एवजा ये है कि मैं एक-दो बार मिलूं तो उसकी तारीफ करूं। लेकिन बार-बार जिससे सीखी है अगर उसकी तरफ मेरी बुद्धि जाये या हमारा मन उस बात को बार-बार सोचता है तो

इसका मतलब ये हुआ कि मैंने जो आज तक सीखा है, वो उसके प्रभाव से है और उसे जिससे सीखा है

सभी इतना ज्यादा क्यों आमादा हैं, क्योंकि आज तक हमको किसी ने बताया नहीं कि सभी जिससे भी गुण लेते हैं, वो गुण परमात्मा के दिये हुए हैं।

आज जो परमात्मा ने गुण और विशेषताएं दी हुई हैं उसको किसी व्यक्ति का मान लेना हमारी कमजोरी सिद्ध करता है। और जब उस कमजोरी को बार-बार सोचते हैं तो हमारा व्यर्थ भी चलता है। जैसे एक उदाहरण ले लें कि जिस व्यक्ति से आपने जो कुछ सीखा, कुछ भी सीखा है, कुछ भी सुना है, कुछ भी देखा है, उसकी आप ऐसी कोई हरकत देख लो जिससे आपका मन डिस्टर्ब हो जाये, मन परेशान हो जाये, तो उस समय आप क्या करेंगे? जो कुछ आपने सीखा है ना, उसको आप छोड़ना चाहेंगे। कि मैंने पता नहीं क्यों इसको अपना आदर्श बनाया, क्यों इसको अपने साथ जोड़ा! इसीलिए परमात्मा एक बात हम सबको सिखाते हैं कि व्यर्थ चलने का मात्र एक

लेकिन आध्यात्मिकता कहती है कि सकारात्मकता तो सकारात्मकता को अट्रैक्ट करती है और नकारात्मकता को अट्रैक्ट करती है। तो जब हम किसी भी व्यक्ति के प्रभाव में होते हैं तो कुछ दिनों में हम वैसे ही बनने लग जाते हैं।

इसका मतलब ये हुआ कि हम उस चीज को पूरी तरह से अपना लेते हैं। और अपनायेंगे ही, ये नियम है। ये विज्ञान का नियम है। ये आध्यात्मिकता का भी नियम है। तो इसलिए हम क्यों ना अपने आप को सम्भालें। उन गुणों और शक्तियों को परमात्मा से लें, परमात्मा से महसूस करें। सिर्फ एक बल और एक भरोसे के साथ परमात्मा से जुड़ें और उससे सारे गुण लेकर अपनायें ताकि हमारे अंदर जो बल आये, उसका जो आधार हो, वो हमेशा शक्तिशाली हो। उसका प्रभाव भी हमारे ऊपर पड़े तो हमको हमेशा पॉवर मिले, शक्ति मिले। कमजोरी फील न हो। किसी भी तरह से हम खुद को परेशान फील न करें। तब जाकर कहा जायेगा कि हमने कुछ कार्य किया।

तो इस तरह से व्यर्थ और समर्थ संकल्पों की सोच को बदलना है तो सबसे पहले हमको इस बात का ध्यान रखना है कि कहीं मेरा कोई छोटा-सा भी लगाव तो नहीं है। जहाँ लगाव है वहाँ व्यर्थ है। पक्का व्यर्थ है। इसीलिए शक्तियां हमारी क्षीण होती जा रही हैं। क्योंकि कहीं न कहीं, किसी न किसी को हमने अपना आदर्श बनाया हुआ है। तो सम्भालो खुद को और निकलो इस प्रभाव से।

हमारी क्षमता क्यों घट जाती है

उससे हमारा लगाव भी है। तो हमेशा आप उससे मिलना चाहेंगे, उसको देखना चाहेंगे, उससे बात करना चाहेंगे, उससे बात कर-करके अपने आप को मेंटेन भी करना चाहेंगे। तो इससे एक बात और जग-जाहिर हो जाती है कि जिस चीज से हम सब इतने समय से दूर रहे, इतने समय तक जिसको हमने नहीं समझा, नहीं जाना, नहीं पहचाना, उस चीज पर हम

कारण है, वो है लगाव या प्रभाव या झुकाव। क्योंकि जिसके प्रति हमारा झुकाव होता है ना, उसकी याद हमको बहुत आती है। और साइंस के नियम अनुसार जिस व्यक्ति की हमको याद आती है, उसके सारे गुण-अवगुण, उसकी परिस्थिति, उसकी हर एक बात कुछ दिन में हमारी हो जायेगी। क्योंकि साइंस कहता है कि सकारात्मक, नकारात्मक को अट्रैक्ट करता है,

प्रश्न : एक ऐसी मान्यता है कि यदि लड़की और लड़का अविवाहित रह जायें तो उनकी कामनायें जोकि अतृप्त रह जाती हैं इसलिए वो भटक जाती हैं, क्या ये सत्य है?

उत्तर : कामनायें अतृप्त रह जाती हैं, लेकिन वो भटकेंगी नहीं अगर वो योगाभ्यास करेंगे बहुत अच्छा तो। क्योंकि इनकी जो वासनाओं की कामना है ना वो चैनलाइज हो जायेंगी। वो जो शक्ति है फिजिकल पॉवर, वो स्पिरिचुअल पॉवर में बदल जायेगी और वो पॉवर उनको बहुत डिवाइन कर देगी और आनंद में रखेगी तो मन जब आनंद में होगा वासनाओं की ओर जो मन खींचा रहता है उससे मुक्त हो जायेंगे।

ये बिल्कुल नैचुरल है जो अविवाहित रह गये, पवित्रता की धारणा के लिए उनके पास कुछ नहीं है तो उनकी वासनायें उन्हें सतायेंगी। वो इधर-उधर भी भटकेंगी अवश्य। लेकिन राजयोग के अभ्यास से इन वासनाओं को न्यूट्रल करने की शक्ति आ जाती है। तो वासना शुभ कामनाओं में बदल जाती है, ये फिजिकल आनंद स्पिरिचुअल आनंद में बदल जाती है। और तब उनको भटकना नहीं पड़ता।

प्रश्न : मैं हैदराबाद से शालिनी शर्मा हूँ। योग के बहुत अलग-अलग स्वरूप हैं। कभी रूहरिहान की बात की जाती है, कभी डील की बात की जाती है, कभी बीज रूप की बात की जाती है तो मन में कन्फ्यूजन होता है कि हम क्या करें, क्या न करें। तो क्या इसका कोई क्रम नहीं कि हम यहाँ से शुरुआत करें और यहाँ तक पहुंचें या इन सबको मिला-जुला कर भी किया जा सकता है?

उत्तर : हरेक अभ्यासी की अपनी-अपनी मेंटैलिटी होती है। किसी को अपनी मन स्थिति को स्थिर करने के लिए प्रारम्भिक अभ्यास करने आवश्यक होते हैं। इसके लिए पाँच

स्वरूपों का अभ्यास बहुत काम करता है। इससे नये-नये थॉट क्रियेट होते हैं और पुराने थॉट सब समाप्त हो जाते हैं।

दूसरे कुछ ऐसे अभ्यासी होते हैं जिन्हें एकाग्रता की बहुत जरूरत होती है। तो स्पिरिचुअल डील, रूहानी डील, तीनों लोकों में जाना और वापिस आना इसके द्वारा एकाग्रता बहुत बढ़ जाती है और लम्बे समय तक योग का आनंद ले सकते हैं। पॉवरफुल योग कभी परमधाम में, कभी किरणों के नीचे, कभी उसकी छत्रछाया के नीचे, इसे ज्वालास्वरूप योग, पॉवरफुल योग कहते हैं। ये भी करना है तो हर तरह के योग अभ्यास को अपनाना चाहिए।

मन की बातें



- राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

क्योंकि हरेक से अनुभूति अलग-अलग होगी। लेकिन फाइनल यही है कि हम परमात्मा से जुड़ जायें। उसके पास जाकर बैठ जायें, उससे आनंद के वायब्रेशन महसूस करें। उसकी शक्तियों को, उसकी एनर्जी को अपने में भरें।

जब भी योग में बैठें तो 10 मिनट पहले ये लक्ष्य ले लें कि 10 मिनट मुझे ये अभ्यास करने हैं, इस तरह से वायब्रेशन फैलाने हैं।

प्रश्न : मैं मोहम्मद अकबर हूँ, मुम्बई से। आपने चर्चा की थी कि योग को मनोरंजन और रूचिकर भी बनाया जा सकता है। अब तक तो हमने सुना था कि जब हम ध्यान करते हैं तो ध्यान करने के बाद बिल्कुल एकाग्रता आती है। योग को कैसे मनोरंजक बनाया जाये और हम

समाज में रहते हुए भी कैसे सबके साथ बैलेन्स बना कर रखें?

उत्तर : बहुतों के साथ ये बातें हो ही रही हैं। नई-नई भी बहुत आत्मायें राजयोग सीखने आ रही हैं और उन्हें इन चीजों की बहुत जरूरत होती है ताकि वो अपने सोशल लाइफ में रहते हुए या कहीं कार्यरत होते हुए या कोई अच्छे अधिकारी होते हुए योग को एन्जॉय कर सकें। केवल यदि यही बताया जाता है कि चलो योग लगा लो, तो ये पर्याप्त नहीं है।

लगाना तो योग ही है लेकिन उसका 16 तरीकों से अभ्यास किया जा सकता है। जैसे किसी काम में आप अभ्यास कर लें कि मैं आत्मा यहाँ बैठी हूँ, हाथों द्वारा काम कर रही हूँ। मान लो आप पेंटर हैं तो आपकी बहुत अच्छी एकाग्रता हो जायेगी। मैं आत्मा हाथों द्वारा पेंटिंग कर रही हूँ। आप भोजन बना रहे हैं तब भी ये अभ्यास कर लें- मैं परमपवित्र आत्मा हूँ, बाबा के लिए भोजन बना रही हूँ। और बाबा से बीच-बीच में बातें करते रहें कि बाबा देखो मैं

आपके लिए दाल बना रही हूँ। मैंने कितनी अच्छी रोटी बनाई है, खा लेना अच्छे से। जलने नहीं दी है। देख लेना नमक बिल्कुल अच्छा डाला है फिर न कह देना कि ज्यादा हो गया। सब खा लेना, मैंने बहुत प्यार से बनाया है आपके लिए। ऐसे बाबा से बातें करते हुए भोजन बनायें। कपड़े धो रहे हैं, सफाई कर रहे हैं, सफाई करते हुए संकल्प कर लें हजार भुजाओं सहित बाबा मेरे साथ हैं, तो सफाई करने में बड़ा आनंद आयेगा। बाबा मैं घर की सफाई कर रही हूँ, आप मेरी बुद्धि की सफाई करते रहना। मेरी बुद्धि में कोई कचरा न आने पाये। मैं भी ध्यान रखूंगा, आप भी ध्यान रखना। कपड़े धो रहे हैं, तो ये देह भी मेरा वस्त्र है इसको भी मुझे स्वच्छ रखना है। फिर अभ्यास कर लें कि बाबा की किरणें

मुझ पर पड़ रही हैं। जब टैप से पानी पड़ेगा ना तब सोचना है कि ऊपर से शक्तियों का फाउंटन मेरे ऊपर पड़ रहा है। पानी पीना है, चाय पीनी है तो 2-3 बार अभ्यास कर लें कि मैं पवित्रता का फरिश्ता हूँ। तो ये मनोरंजन हो जायेगा।

एक बहुत अच्छा इंटरस्टिंग अभ्यास मैं बता रहा हूँ- हम ऐसा देखें हमारी लेफ्ट साइड में ब्रह्मा बाबा है। सूक्ष्म रूप में वो हमारी माँ है। उनके मस्तक से शीतल किरणें मुझे आ रही हैं। 10 सेकण्ड महसूस करें कि मेरे चित्त को शीतल कर रही हैं। फिर अपने राइट साइड में देखें ज्ञान सूर्य शिव बाबा है। अब उससे शक्तियों की किरणें निकल कर मुझ पर आ रही हैं। फिर ब्रह्मा बाबा से शीतलता की किरणें। फिर शिव बाबा से शक्तियों की किरणें। इस तरह से करते रहें तो मनोरंजन हो जायेगा। खेल हो जायेगा और हम योग के नये-नये तरीके सीखते जायेंगे। ऐसे ही सकाश देने की बात होती है, संसार को वायब्रेशन देने की बात होती है उसको भी हम वैरायटी ढंग से करेंगे तो ये मनोरंजन भी हो जायेगा और हमारे चित्त को भी बड़ा सुकून देगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपको अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल

Peace of Mind CABLE Network

hathway DEN CABLE

GTPL FASTWAY CABLE

TATA SKY 1065 678

VIDEOCON 1221 dishtv 1087

TATA SKY 1084

1060

578

उपलब्ध पुस्तकें

जो आपके जीवन को बदल दे



लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने ब्रह्माकुमारीज के 'सकारात्मक परिवर्तन वर्ष' का राष्ट्रीय स्तर पर किया शुभारंभ

व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण एवं राष्ट्र निर्माण के साथ विश्व निर्माण का कार्य कर रही है ब्रह्माकुमारी संस्था : ओम बिरला



नई दिल्ली। विश्व योग दिवस के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज संस्थान द्वारा स्थानीय इन्दिरा गांधी इनडोर स्टेडियम में आयोजित एक विशाल सार्वजनिक कार्यक्रम को मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित करते हुए लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने कहा कि पिछले आठ दशक से ब्रह्माकुमारीज संस्था व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण, राष्ट्र निर्माण से विश्व निर्माण का कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि इस सकारात्मक परिवर्तन वर्ष में यह विश्व व्यापी संस्थान राजयोग शिक्षा के माध्यम से लोगों के अंदर नयी सकारात्मक

ऊर्जा, सकारात्मक चेतना तथा सकारात्मक प्रेरणा विकसित करेगा। उन्होंने आगे कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्थान के भाई-बहनों के 'स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन' वाला सिद्धांत शीघ्र ही साकार व सार्थक हो सकता है, अगर जनता इसे आचरण में लाए तो। ब्रह्माकुमारीज के अति. महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई ने बताया कि हमारे पूर्वजों ने स्लोगन दिया है दया धर्म का मूल है। इसलिए परमपिता को दयालु, कृपालु व क्षमा करने वाला कहते, जो कि सभी कर्म विधान से ऊपर है। उन्होंने कहा कि

परमात्मा की संतान होने के नाते उनके गुणों को जैसे कि दया, प्रेम, शांति, आनंद, सहयोग आदि को अपने में लाने से सकारात्मक परिवर्तन संभव होगा। टाइम्स ऑफ इंडिया की सह संपादक तथा

इंदिरा गांधी इनडोर स्टेडियम में योग दिवस पर हजारों लोगों के मध्य महानुभावों ने रखे अपने विचार

स्पीकिंग ट्री की पूर्व मुख्य संपादक नारायणी गणेशन ने व्यक्तिगत आंतरिक परिवर्तन जिससे सामूहिक परिवर्तन संभव होगा, जीवन में दया और करुणा के समावेश से समाज की अद्भुत

अलौकिक सेवा होगी आदि सकारात्मक परिवर्तन के लिए 5 सूत्र प्रस्तुत किये। इसके लिए उन्होंने राजयोग अभ्यास को अपनाने पर जोर दिया। गुरुग्राम पटौदी से आये महामंडलेश्वर

स्वामी धर्मदेव महाराज ने कहा कि धरती पर स्वर्ग कहीं है तो माउण्ट आबू में, जहां शिव परमात्मा अवतरित हुए हैं। एक बार आबू के बाबू (शिव परमात्मा) के काबू में आ जाओ तो जीवन से

नकारात्मकता समाप्त हो जायेगी। ओम शांति रिट्रीट सेंटर की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि सकारात्मक परिवर्तन के लिए जरूरी है कि जैसा विश्व हम चाहते हैं वैसा ही हम कर्म करें। सुप्रसिद्ध प्रेरक वक्ता ब्र.कु. शिवानी बहन ने प्रेरणा दी कि संसार परिवर्तन होगा व्यक्ति के संस्कार परिवर्तन से और संस्कार परिवर्तन का साधन है परमात्मा के साथ रूहानी योग व राजयोग। इस अवसर पर 'भारत का प्राचीन योग' पैनल डिस्कशन में राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी दीदी, ब्र.कु. शुक्ला दीदी, ब्र.कु. गीता

दीदी, ब्र.कु. पुष्पा दीदी आदि विभिन्न ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्रों की निदेशिका बहनों ने स्पष्ट किया कि योग-आत्मा का परमात्मा से सम्बंध है। इस योग को राजयोग कहा जाता है। मौके पर आयोजित सर्व धर्म संगोष्ठी में बहाई धर्म के ए.के. मर्चेन्ट, यहूदी धर्म के ई.आई. मालेकर, इस्लाम धर्म के जनाब मो. सलीम इंजीनियर एवं ईसाई धर्म के फादर फेलिक्स जोन्स ने अपने विचार रखे व विश्व शांति व सद्भावना के लिए शुभकामनाएं दी। हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. मोहित गुप्ता ने राजयोग के हीलिंग पावर पर अनुभव साझा किए।

वार्षिक थीम '2023 ईयर ऑफ पॉजिटिव चेंज' के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 'सकारात्मक, सार्थक एवं सशक्त जीवन'

वैतुल-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज के वार्षिक थीम '2023 ईयर ऑफ पॉजिटिव चेंज' के अंतर्गत संस्थान के भाग्य विधाता भवन में 'सकारात्मक, सार्थक एवं सशक्त जीवन' विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 11 देशों से आये जनप्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इस अवसर पर श्रीलंका के न्याय मंत्री विजयदासा राजापक्षे ने ब्रह्माकुमारीज प्रांगण में आते ही शांति, प्रेम और सद्भाव की अनुभूति होने की बात कही और इस संस्थान में आना अपना सौभाग्य बताया। प्रसिद्ध टीवी अभिनेता गगन मलिक ने कहा कि आज विश्व में दया और करुणा की बात हम करते हैं, लेकिन वो ब्रह्माकुमारीज में आज मुझे दिखाई दे रही है और यह अनुभूति सदा काल मेरे साथ

रहेगी। थाईलैंड से आये बुद्धिस्ट संत पी. पिनियापांग ने कहा कि महिला शक्ति द्वारा संचालित यह संस्थान निकट भविष्य में **11 देशों के जनप्रतिनिधि पहुंचे ब्रह्माकुमारीज के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में**

श्रीलंका के न्याय मंत्री, प्रसिद्ध टीवी अभिनेता एवं बुद्धिस्ट संत रहे मुख्य रूप से उपस्थित

आध्यात्मिक जगत में सबसे ऊँचा स्थान बनाएगा तथा इनके द्वारा की जा रही सेवाएं निश्चित ही संसार में एक सकारात्मक परिवर्तन लाएंगी। श्रीलंका से आये प्रोड्यूसर एवं डायरेक्टर नवीन गुणारत्ने ने कहा कि नारी शक्ति निश्चित ही एक नए समाज की

स्थापना कर सकती है और ब्रह्माकुमारीज इस बात की मिसाल है। मद्रास परमाणु ऊर्जा संयंत्र के निदेशक एवं राजयोगी ब्र.कु. सुधीर शेल्ले ने अपने आध्यात्मिक जीवन के अनुभव को साझा किया। स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजू बहन ने मेहमानों का स्वागत किया। भोपाल से आई ब्र.कु. पूनम बहन ने संचालन करते हुए राजयोग द्वारा गहन शांति की अनुभूति कराई। ब्र.कु. सुनीता बहन ने सभी अतिथियों को संस्थान के मुख्यालय माउण्ट आबू आने का निमंत्रण दिया। इस मौके पर डिप्टी कलेक्टर निशा बांगरे, थाईलैंड से आये बुद्धिस्ट संत पी.एस. वॉटीवांगसो एवं अन्य संतजनों सहित ब्र.कु. सुनीता बहन, सारणी आदि उपस्थित रहे।

'राजयोग द्वारा स्वस्थ एवं सुखी समाज' विषय पर सभी हुए एकमत



उज्जैन-वेद नगर(म.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर ब्रह्माकुमारीज के शिव धाम सेवाकेन्द्र में 'मानवता' की थीम पर आयोजित 'राजयोग द्वारा स्वस्थ एवं सुखी समाज' कार्यक्रम में महामंडलेश्वर बाल योगी उमेश नाथ जी ने कहा कि सभी को सारे योग व प्राणायाम करना तो संभव नहीं लेकिन कम से कम विषम परिस्थितियों में स्वास्थ्य के साथ-साथ मन को शांति प्राप्त कराने वाले योग का अभ्यास अवश्य करना चाहिए। राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी ने बताया

कि ब्रह्माकुमारीज संस्थान में सिखाये जाने वाले योग में यही सिखाया जाता है कि तन के साथ-साथ आत्मबल कैसे बढ़ाएं, स्व चिंतन, सकारात्मक चिंतन कैसे करें और नकारात्मकता को कैसे खत्म करें। रूपांतरण संस्था के योग गुरु ने कहा कि भक्ति योग, ज्ञान योग, कर्म योग के समायोजन को ही राजयोग कहा जाता है। अतः इसका अभ्यास सभी को करना

चाहिए। डॉ. सोनी, पतंजलि योग ने कहा कि योग माना तन से मन और मन से आत्मा का मिलन फिर आत्मा से परमात्मा का मिलन, यही योग की युक्ति है, अष्टांग योग में आठ अंग बताते हैं। बिंदु सिंह पवार, यूनिवर्सिटी योगा प्रोफेसर ने कहा कि हम अपने जीवन में सारे आसन-प्राणायाम तो शामिल नहीं कर सकते लेकिन छोटी-छोटी चीजें हैं जिस पर ध्यान दें तो तन और मन दोनों स्वस्थ रह सकता है। जैसे जब हम बैठते हैं तो अपनी रीढ़ की हड्डी को सीधा करके

बैठें। इसके साथ ही उन्होंने अनेक प्राणायाम को सही तरीके से करने की जानकारी दी। शिवोहम योगा संस्थान से मंजुला व्यास ने कहा कि योग ईश्वर तक पहुंचने का रास्ता है। ब्रह्माकुमारी संस्था यही कार्य कर रही है। एलआईसी के चीफ मैनेजर दीपक विजयवर्गीय ने भी अपने विचार रखे। ब्र.कु. मंजू दीदी ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया।



25

अगस्त, विश्व बंधुत्व दिवस पर विशेष...

धरा पर परमात्म प्रकाश किरण दादी प्रकाशमणि

उन्होंने ना कभी किसी को कुछ कहा और ना ही कुछ करने के लिए विवश किया और ना ही किसी से कोई इच्छा रखी, सिर्फ कर्म किया और उनके कर्म ही सबके लिए प्रेरणा स्रोत बन गये। परमात्म ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशित कर, प्रकाश स्वरूप में प्रखर हो, जहान में ईश्वरीय प्रेम का परचम लहराया। ऐसे विरले व्यक्तित्व को हम सभी का सहृदय सम्मान व शत-शत नमन।



जिस समाज में नारी को सबने अपने तबके से अलग किया हुआ था, उनको देखने का एक दारिद्र्य भाव, ऐसे में एक प्रकाश इस धरती पर आया और इस सृष्टि के प्रथम मानव को अपना आधार बनाया, जिससे नारी समाज को एक नया आयाम मिला। और नाम दिया ब्रह्माकुमारियां। हरेक ब्रह्माकुमारी अलग-अलग विशेषताओं से ओत-प्रोत है। एक प्रज्ञ-स्थिति वाली नारी ने परमात्मा के कार्य को चहुँ ओर पहुंचाने का अलग तरह का कार्य किया। ब्रह्माकुमारीज, समाज के हरेक मानव को जीवन जीने की एक शैली सिखाता है। यही प्रबल इच्छा लिये हमारी दादी प्रकाशमणि जी आगे बढ़ीं, समाज में उन वर्गों तक पहुंचीं, जहाँ एक आम व्यक्ति के लिए पहुंचना मुश्किल है। और सबको अपने स्नेह के पाश में बांधा।

दुनिया चाहे कुछ भी समझे, ये कोई आम घटना नहीं है या आम व्यक्तित्व नहीं है। ये एक वास्तविक कहानी है एक ऐसी आध्यात्मिक शक्तिशाली नारी की, जिन्होंने वो कर दिखाया जिसे आम जनमानस सोच भी नहीं सकता। दुनिया उन्हीं के पद चिन्हों पर चलती है, जिन्हें किसी में कुछ नया दिखता है या नये तरह का दिखता है। ऐसे एक चमत्कारिक व्यक्तित्व की धनी थीं हमारी दादी प्रकाशमणि जी। जिन्हें हर कोई चाहता, उनके गुणों को अपने में समाना चाहता, उनका उदाहरण दूसरों को दे-दे कर सबको उनके समान बनाना चाहता। ऐसा व्यक्तित्व आज तक ना हमने कभी इन आँखों से देखा है और ना ही इन कानों से कभी सुना है। इतिहास में किये गये सामाजिक कार्य के बहुत सारे नाम दर्ज हैं लेकिन हमने उनको देखा नहीं है सिर्फ सुना है, लेकिन ये तो हमारी आँखों देखी घटना है। इसमें सबकुछ सटीक है, सही है, नया है। हो सकता है कि कहीं पर हम गलत भी हों, लेकिन जो हम कह रहे हैं वो सभी कहते भी

हैं। हरेक ब्रह्माकुमार-कुमारी व अन्य समाज के लोग भी, दादी जी से एक बार जो मिल लेते थे वे उनकी महिमा करते नहीं थकते और पुनः पुनः उनसे मिलने की इच्छा व्यक्त करते। और उन्हें दादी द्वारा कोई बात कही जाती तो वे उन्हें सहजता से करने लग जाते। मानने

वाली बात ये है कि ये दृष्टांत आने वाले समय में बहुतों को प्रेरणा देगा। इसमें सिर्फ दादी, उनके गुण, उनकी विशेषताएं और उनका सबकुछ समाया हुआ है। और हम ऐसा दादी के स्मृति दिवस पर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि देते हैं। पाँचों महाद्वीपों में दादी के चरित्र की

छाप और उस चरित्र की गाथा गाने वाले आज पूरे विश्व में कहीं-न-कहीं किसी-न-किसी स्थान



पाँचों महाद्वीपों में दादी के चरित्र की छाप और उस चरित्र की गाथा गाने वाले आज पूरे विश्व में कहीं-न-कहीं किसी-न-किसी स्थान पर सेवा कर रहे हैं।

पर सेवा कर रहे हैं। दादी के कर्तव्य आज हम आत्माओं के द्वारा जीवित व चित्रित हैं। ऐसी विदुषी सशक्त नारी, सम्पूर्ण मानव समाज को दिल खोलकर उस दिलाराम परमात्मा की याद दिलाने वाली करिश्माई व्यक्तित्व की धनी आज भी इत्र की भांति सबके जहन में महक रही है। ऐसे पवित्र इत्र को हम कुछ शब्दों में, कुछ वाक्यों में, कुछ लाइनों में न चित्रित कर सकते हैं और न

चरितार्थ कर सकते हैं। बस कुछ प्रेरणाओं को जो हमारी दादी से हम सबको मिली, वो आपके सामने रख सकते हैं। तो ये विशेष अंक आप सभी पाठकों को इसलिए भी समर्पित है ताकि आप ऐसे व्यक्तित्व को जानें और कैसे उन्होंने परमात्मा को प्रत्यक्ष किया, उसका चिंतन भी करें और उस चिंतन से कुछ अपने व्यक्तित्व को निखारने की हिम्मत जुटायें।

RNI NO RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/21-23, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)

Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2021-23, Posting on 12th TO 14th and 22nd TO 24th each month, published on 12th July, 2023

स्वामी - राजयोगा एजुकेशन रिसर्च फाउण्डेशन, प्रकाशक, सम्पादक एवं मुद्रक- गंगाधर नरसिंहानी द्वारा कैपिटल ऑफसेट, L 801-1, Sector-28, GIDC Gandhinagar(Guj.) से मुद्रित एवं ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज, शांतिवन-राज. से प्रकाशित।

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया

ब्रह्माकुमारीज, शांतिवन, - 307510

See Latest News

www.omshantimedia.org